सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 93, नई दिल्ली । शुक्रवार, 14 जून 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जितना और हारना यह तो आपकी सोच पर निर्भर करता है मान लो तो हार होगी और ठान लो तो जीत होगी।

03 दिल्ली में प्रदूषण को कम करने के लिए सरकार की अनोखी पहल
06 कर्मचारियों के लिए सरल बने चुनावी प्रक्रिया
08 सुप्रीम कोर्ट ने फिल्म 'हमारे बारह' की रिलीज पर लगाई रोक

दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा जनता के लिए एक और सब्जबाग

संजय बाटला

नई दिल्ली। अपने कार्य को करने/कराने की जगह हर तरीक़े से तथा जारी सभी निर्देशों, आदेशों, एडवाइजरी, नोटिफिकेशन और गैजेट नोटिफिकेशन को सिर्फ़ राजस्व वसूली और राजस्व में इज़ाफा करवाने में कार्यरत **परिवहन विभाग का जनता को एक और सब्जबाग। जी हां दिल्ली में एक और आईएसबीटी।** दिल्ली की सभी सीमाओ पर बाहरी वाहनों, हैवी वाहनों एवम्‌ दिल्ली में लागू मानक के अतिरिक्त आने वाले वाहनों को रोकने और उनके लिए स्थल उपलब्ध करवाने के सब्जबाग को देखते हुए जनता की दूसरी पीढ़ी जवान हो चुकी है ओर अब फिर वहीं सब्जबाग, आखिर क्यों दिखाता है परिवहन विभाग जनता को इस तरह के सब्जबाग यह बड़ा महत्वपूर्ण सवाल है पर उसका सही जवाब जनता को इस विभाग से तो कोई नहीं देगा।

झुलझूली में ड्राइविंग स्किल डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट कि जगह पर वाहन जांच शाखा बना देना,

बुराड़ी में चल रहें आटो जांच शाखा को डिपो बना देना,

बुराड़ी में चल रहे ड्राइविंग स्किल डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट की आधी जगह लेकर डिपो बना देना और

बने बनाए और चलते हुए ड्राइविंग स्किल डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट को बंद करने की घोषणा कर प्राइवेट कम्पनी को डिपो के नाम पर जगह देने वाला विभाग क्या जनहित का वो कार्य करेगा जिससे जनता का हित हो पर राजस्व में बेहतरीन इज़ाफा ना हो इसकी आज कल तो उम्मीद नहीं।

अपने ही मुख्यालय को को छोड़ कर परिवहन निगम के मुख्यालय में अपने पद के बल पर कब्जा कर बैठ जाने वाले आला अधिकारी क्या सच में जनहित के प्रति मनोनीत और आसिन है बड़ा सवाल?

तीन पहिया वाहन की एक श्रेणी की जांच बुराड़ी क्षेत्र में और दूसरी श्रेणी के लिए झुलझुली क्षेत्र, कैसा दोहरा चरित्र?

इलेक्ट्रिक वाहन की कोई श्रेणी बिना परमिट सड़को पर मान्य और कोई श्रेणी पर रोक, कैसा दोहरा चरित्र?

दिल्ली में पंजीकरण होने वाले व्यवसायिक सवारी वाहनों के लिए कड़े नियम और शर्ते पर सड़को पर उन शर्तो और नियमो के बिना बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहनों को 24 घंटे 12 महीने दिल्ली में चलते रहने की छूट, कैसा दोहरा चरित्र?

दिल्ली में बने थोड़े से इलेक्ट्रिक चार्जिंग सेंटरों पर दिल्ली की जगह बाहरी राज्यों के व्यवसायिक वाहनों का जमावड़ा और कोई कार्यवाही नहीं, कैसा दोहरा चरित्र?

ऐसे में दिल्ली को प्रदुषण मुक्त के लिए दिखाए गए सब्जबाग से क्या सच में हो पायेगा दिल्ली में प्रदुषण पर नियंत्रण, बड़ा सवाल ?

एनसीआरटीसी का ऐलान, 16 जून को सुबह छह बजे से चलेगी नमो भारत ट्रेन; इस वजह से लिया फैसला

यूपीएससी सिविल सर्विस परीक्षा को देखते हुए गाजियाबाद में नमो भारत ट्रेन की टाइमिंग में बदलाव हुआ है। उम्मीदवार को सुबह छह बजे से सेवा मिलेगी।

नई दिल्ली। रविवार यानी 16 जून को सुबह छह बजे से आरआरटीएस कॉरिडोर पर नमो भारत ट्रेनों का संचालन किया जाएगा। यूपीएससी की परीक्षा के मद्देनजर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) ने यह फैसला लिया है।

एनसीआरटीसी के प्रवक्ता पुनीत वत्स ने बताया कि दिल्ली-गाजियाबाद आरआरटीएस कॉरिडोर पर नमो भारत ट्रेन सेवा सुबह आठ बजे से शुरू होती है और रात 10 बजे तक जारी रहती है। यूपीएससी की परीक्षा को ध्यान में रखते हुए 16 जून को दो घंटे पहले यानी सुबह छह बजे से ही ट्रेन सेवा यात्रियों को उपलब्ध करा दी जाएगी।

आरआरटीएस कॉरिडोर के आसपास स्थित परीक्षा केंद्रों पर आने वाले परीक्षार्थियों को इससे सहूलियत मिलेगी वर्तमान में आरआरटीएस कॉरिडोर पर साहिबाबाद से मोदी नगर नॉर्थ तक नमो भारत ट्रेनों का संचालन किया जा रहा है। इसके आसपास बड़ी संख्या में शैक्षणिक संस्थान हैं, जहां प्रतियोगी परीक्षाओं का आयोजन होता है, जिसमें बड़ी संख्या में परीक्षार्थी सम्मिलित होते हैं।

Nomination Open Applying now

RNI No. RNI No :- DELHIN/2023/86499

परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र
प्रस्तुत

पुरस्कार सम्मान समारोह

सम्मान निशुल्क हैं, इसके लिए कोई शुल्क नहीं है

सम्मान आपकी योग्यता के अनुसार कमेटी द्वारा किए/ लिए गए निर्णय पर आधारित है।

आप भी सम्मान प्राप्त करने के हकदार हैं अगर 1. आपने जन कल्याण के प्रति, 2. समाज कल्याण के प्रति, 3. सड़क सुरक्षा के प्रति, 4. जाम एवम् दुर्घटना मुक्त सड़को के प्रति, 5. प्रदुषण से बचाव के प्रति एवम् 6. अन्य किसी भी क्षेत्र (शिक्षा, चिकित्सा, न्यायिक इत्यादि) में सरकारी विभाग/विभागों के पद पर कार्यरत रहते, संगठन में या अकेले विशिष्ट कार्यों में सहभागी बने हैं या बने हुए हैं तो आप सम्मान प्राप्त करने के हकदार हैं। प्रतिभाशाली और जन कल्याण के कार्यों में जुड़े आप सभी गणमान्य हस्तियों को सम्मान प्रदान करने के लिए यह सम्मान समारोह आयोजित किया जा रहा है।

दिनाक : 06 जुलाई 2024 समय : 4 p.m.

स्थान : कांस्टीट्यूशन क्लब आफ इंडिया, रफी मार्ग नई दिल्ली 110001

मुख्य अतिथि : जस्टिस श्री सतीश चंद्रा (रिटायर्ड)

प्राप्य गणमान्य व्यक्तियों के लिए निम्नलिखित श्रेणियां:-

1. सड़क सुरक्षा 2. विशेष योगदान (पर्यावरण संरक्षण/पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलर) 3. वाहन निर्माता/ डीलर 4. परामर्श विशेषज्ञ (परिवहन) 5. विशेष योगदान (परिवहन सुरक्षा/व्यवस्था) 6. विशेष योगदान (वाहन चालक/मालिक) 7. विशेष योगदान (कानून/न्याय/न्यायालय/अधिवक्ता) 8. विशेष योगदान (चिकित्सा) 9. योगदान सम्मान पुरस्कार (सेवानिवृत्त अधिकारी) 10. मीडिया/रिपोर्टर

सम्मान पुरस्कार प्राप्त करने के लिए ऑनलाइन आवेदन करना अनिवार्य है। नॉमिनेशन आवदेन खुल चुका है और 25 जून तक खुला रहेगा आप 25 जून तक अपना ऑनलाइन नॉमिनेशन फार्म भरकर जमा कर दे।
नॉमिनेशन फार्म नीचे दिए गए लिंक को क्लिक कर सकते है।
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSd5S63UXtvzhIoiFiCd_SybN3-acTb6hze5f6vXHqpoO3c2-A/viewform?usp=sf_link

3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, A-4 पश्चिम विहार, नई दिल्ली : 110063 सम्पर्क : 9212122095, 9811902095
www.newsparivahan.com, www.newstransport.in
news@newsparivahan.com, bathlasanjaybathla@gmail.com

हर वक्त छाई रहती है उदासी? 13 आदतों से जीवन में लाएं हैप्पीनेस, निगेटिव सोच छू भी नहीं पाएगी

जीवन कभी एक समान नहीं चलता है. कभी खुशी तो कभी गम के बादल छाए रहते हैं. इससे सोच और मानसिकता भी काफी हद तक प्रभावित होती है. अगर आप बुरे दौर से गुजर रही हैं और खुशियों के लिए तरस गई हैं तो अपनी आदतों में कुछ बदलाव लाकर देखें. हर हालात में खुद को खुश रख सकेंगी.

स्ट्रेस आज के लाइफस्टाइल का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है. तनाव और संघर्षों के बीच खुद को खुश रखना आसान काम नहीं होता. ऐसे में उदासी और अवसाद की भावनाएं ज्यादातर वर्किंग और हाउस वाइफ्स के जीवन को निराशा से भर देते हैं.

प्रिवेंशन डॉट कॉम के मुताबिक, मैनहट्टन के क्लिनिकल न्यूरोसाइकोलॉजिस्ट जूडी हो के अनुसार, खुशी का मतलब यह नहीं है कि हमारे आसपास नकारात्मक भावनाएं ना हों और सकारात्मक भावनाओं की प्रचुरता हो. खुश होने का अर्थ है जीवन जीने और अपने मूल्यों के अनुसार जीने के बारे में सोचना. जब आप जीवन और खुशियों को इस तरह सोचेंगे तो अपने इमोशनल उतार-चढ़ाव का बेहतर तरीके से सामना कर पाएंगे. आइए जानते हैं कि आप अवसाद के दौर में खुद को किस तरह खुश रख सकती हैं.

खुशियों के लिए 13 आदतों को जीवन में करें शामिल

1.आपके पास जो कुछ भी है उसके लिए कृतज्ञता की भावना रखें और छोटी-छोटी मदद करने पर भी लोगों को धन्यवाद देना शुरू कर दें.

गर्मी में डिहाइड्रेशन से बचाएंगे ये फूड

गर्मी में डिहाइड्रेशन से बचाएंगे ये फूडआगे देखें...

2. सुबह के वक्त सकारात्मक चीजें करें और दिन की शुरुआत स्ट्रेचिंग, व्यायाम, ध्यान, आध्यात्मिक किताबों के साथ करें.

3. अपने लिए जॉय लिस्ट बनाएं और रोज कुछ ऐसा काम करें जिसे करने में आपको बहुत अधिक मजा आता है.

4. मेंटल हेल्थ के लिए इंडॉरफिन हार्मोन का रिलीज होना जरूरी है, इसके लिए आप नियमित रूप से अधिक से अधिक व्यायाम, वॉक, डांस आदि करें.

5. खुद को अधिक से अधिक हाइड्रेट रखने का प्रयास करें जिससे मूड पर निगेटिव बातों का असर कम पड़ता है और आप खुद को बेहतर रख पाते हैं.

6. पर्सनल गोल्स बनाएं और उन्हें अचीव करने के लिए प्रयास करें. दरअसल जब आप खुद के लिए कुछ अच्छा करती हैं तो आप अंदर से खुश हो पाती हैं.

7. खुद का चैलेंज देते रहें और अपने बाउंड्री से बाहर आकर कुछ ऐसा काम करें जो अब तक आपने नहीं किया. अचीव करने पर खुद को रिवार्ड भी दें.

8. अपने लाइफ में कुछ मीनिंग फुल काम करें. इसके लिए आप प्लान बनाएं और अपनी क्रिएटिविटी पर भरोसा करें.

9.अगर आपको डिसीजन लेने में समस्या आती है तो पहले खुद को इसके लिए तैयार करें और अपने निर्णय खुद लेना शुरू कर दें.

10. तनाव हर किसी के जीवन का हिस्सा है, ऐसे में खुद को स्ट्रेस के असर से बचाने का जहां तक हो सके, प्रयास करें.

11. गहरी सांस आपको परेशानियों से बचा सकती है. इसलिए गहरी सांस लेने की आदत डालें. इसके अलावा आप दिन में दो बाद प्राणायाम आदि का अभ्यास करें.

12. लोगों से मिलें और अपना दायरा बढ़ाएं. अपने पसंद और हॉबीज वाले लोगों के साथ दोस्ती करें और क्लब आदि ज्वाइन करें.

13. अपनी सेहत को प्रयोरिटी में लें और हेल्दी डाइट मेंटेन करने के लिए हर संभव प्रयास करें. हेल्दी ब्रेकफास्ट, लंच और डिनर की आदत डालें और समय पर खाना पीना करें.

ये आदतें आपके अवसाद को धीरे धीरे दूर करने लगेंगे और आप अंदर से खुशियां महसूस कर पाएंगे.

आखिर कौन सी आदतें महिलाओं को बना देती हैं मेंटली स्ट्रॉन्ग? जान लें आप भी, मुश्किल काम चुटकियों में सीख जाएंगी निपटाना

इंसान की आदतें या तो उसकी पर्सनैलिटी को बनाती है या बिगाड़ देती है. ऐसे में अगर आप मेंटली स्ट्रॉन्ग बनना चाहती हैं तो पहले इन 5 आदतों को अपना लें. ये आदतें उन लोगों में देखने को मिलती हैं, जो मानसिक रूप से मजबूत होते हैं. जिन्हें हर हाल में जीत हासिल करना आता है.

इंसान के लिए जितना जरूरी शारीरिक रूप से मजबूत होना है, मेंटली स्ट्रॉन्ग होना भी बहुत जरूरी है. जब आप मानसिक रूप से मजबूत होती हैं तो आप आसानी से अपने लक्ष्य को हासिल कर पाती हैं और तमाम चुनौतियों के सामने सिर उठाकर उनका सामना करती हैं. ऐसे लोग बुरे हालात में भी अपनी जिंदगी को बेहतर बना लेते हैं, जिससे उनके आसपास खुशियां खुद ही आ जाती हैं. फोर्ब्स के मुताबिक, दरअसल, मेंटली स्ट्रॉन्ग पर्सनैलिटी वाले लोगों में सेल्फ कंट्रोल और मेंटल डिसिप्लिन जबरदस्त होता है. ऐसे लोग तनाव, चैलेंज या खतरे को देखकर घबराते नहीं. आइए जानते हैं कि मेंटली स्ट्रॉन्ग महिला बनने के लिए किन आदतों को अपनाना होगा, जिससे आप हर हालात से जीत हासिल कर पाएंगी.

मेंटली स्ट्रॉन्ग महिलाओं में होती हैं ये आदतें

खुद की कमियों को दूर करना

दरअसल, कमजोर मानसिकता के लोग दूसरों में कमी निकालकर अपनी कमियों को छिपाने का प्रयास करते हैं, जबकि जो मेंटली स्ट्रॉन्ग होते हैं, वे ऐसा नहीं करते. वे खुद के अंदर की कमियों को ढूंडकर उन्हें सुधारने का प्रयास करते हैं. आप भी इस आदत को अपना सकती हैं.

चेहरे से हटानी हैं झुर्रियां तो खाएं ये फल!

चेहरे से हटानी हैं झुर्रियां तो खाएं ये फल !आगे देखें...

दूसरों से सीखने में शर्म नहीं

ऐसी महिलाएं हर किसी से कुछ नया सीखने के लिए तैयार होती हैं. वह खुद की जानकारी पर भरोसा रखती हैं, लेकिन अगर उन्हें कोई नई बात बताता है या उन्हें लगता है कि सामने वाला इंसान बेहतर जानता है तो उसकी इज्जत करती हैं और उसकी अच्छाई सीखने से परहेज नहीं करती.

खुद को लाचार नहीं समझना

कुछ महिलाएं हर हाल में खुद को विनर बनाने के लिए प्रयास करती हैं लेकिन कुछ दया का पात्र बनकर मेहनत से बचती हैं. मसलन, अगर एक मेंटली रूप से स्ट्रॉन्ग दिव्यांग महिला को लोग कहें कि तुम तो परेशान हो जाओगी इसलिए यह काम मत करो. लेकिन वह दिव्यांग होते हुए भी अपनी ड्रीम लाइफ को जीने के लिए हर वो काम करती है, जो उसके लिए काफी चैलेंजिंग हो सकता है. आप भी उनसे प्रेरणा लें.

डर के आगे जीत का फॉर्मूला

मानसिक रूप से मजबूत महिलाएं डर से घबराती नहीं. उन्हें पता होता है कि डर जाने से कोई इंसान पीछे जा सकता है, जबकि डर से अगर जीत गया तो हालात से निपटने में आसानी होती है. ऐसी महिलाएं जोखिम लेने में नहीं चूकती और हार के लिए भी मेंटली तैयार रहती हैं. इसलिए ऐसे महिलाएं अचीवर बन पाती हैं.

दया की पात्र नहीं बनती

कुछ लोग सिंपैथी लेकर जीना पसंद करते हैं, जबकि कुछ हौसले के साथ जीना चाहते हैं. ऐसे महिलाएं खुद को दया का पात्र ना तो समझती हैं और ना ही लोगों से किसी तरह की दया की उम्मीद करती हैं. उन्हें हर हाल में खुद पर भरोसा होता है. इस तरह अगर आप भी इन आदतों को अपने जीवन में उतार लें तो आप भी मेंटली स्ट्रांग बन सकती हैं।

योग के क्षेत्र में करियर बनाने के अवसर

योग और योगाभ्यास की बढ़ती लोकप्रियता के चलते आज इस क्षेत्र में नौकरी के अवसर पहले की तुलना में कहीं ज्यादा हैं। सरकारी, प्राइवेट या निजी सेंटर खोलकर आप इस क्षेत्र में अपना करियर बना सकते हैं। आज पूरे विश्व में योग का बहुत बड़ा बाजार है, जिससे लाखों लोगों की आजीविका जुड़ी है'

पौराणिक काल से शुरू हुए योग की लोकप्रियता आज दुनियाभर में फैल चुकी है। योग की उत्पत्ति संस्कृत शब्द 'युज' से हुई है जिसका अर्थ है जोडऩा। आत्मा का परमात्मा से जुडऩे का माध्यम ही योग है। भागदौड़ भरी जिंदगी में हर व्यक्ति स्वस्थ रहना चाहता है, लेकिन व्यस्तता के बीच अकसर हम अपनी सेहत को नजरअंदाज कर देते हैं। ऐसे में योग बहुत ही सरल उपाय है जिसके जरिए हम शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकते हैं। भारतीय संस्कृति और पौराणिक मान्यताओं के अनुसार भारत में योग का इतिहास बहुत पुराना है और महर्षि पतंजलि के योगसूत्र इसके मूल में हैं। मौजूदा समय में शरीर को स्वस्थ रखने और तनाव को दूर करने के लिए विश्व स्तर पर योग सबसे सटीक माध्यम है। आज स्ट्रैस और हाइपरटेंशन भरे माहौल में योग का महत्व और ज्यादा बढ़ गया है। योग की लोकप्रियता को देखते हुए इस क्षेत्र में करियर के भी अवसर बढ़े हैं। 2015 से हर वर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। लाखों लोगों के लिए योग अब एक पसंदीदा करिअर ऑप्शन भी बन गया है। योग को अपनाने से न सिर्फ आप सेहतमंद हो सकते हैं बल्कि आप इसमें बेहतर करिअर भी बना सकते हैं। आज पूरी दुनिया में योग टीचर और एक्सपट्र्स की मांग बढ़ती जा रही है।

योग शिक्षक बनने से पहले जरूरी है कि आपको योग की पूरी समझ और जानकारी हो क्योंकि योग में आसनों को सही तरीके से करना जरूरी है। अगर आप एक भी योगासन गलत तरीके से करेंगे या कराएंगे तो वह किसी नई परेशानी को जन्म दे सकता है। योग के क्षेत्र में 12वीं या ग्रेजुएशन के बाद करिअर बना सकते हैं। देश में ऐसे कई संस्थान हैं जो योग में डिग्री, डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्सेस ऑफर करते हैं। योग में 3 साल की डिग्री के साथ ही 1 साल और 6 माह के डिप्लोमा कोर्स उपलब्ध हैं। इसके अलावा बैचलर ऑफ आट्र्स (योग), बैचलर ऑफ साइंस (योग), मास्टर्स ऑफ आट्र्स (योग), मास्टर ऑफ साइंस (योग), पीएचडी (योग) की डिमांड सबसे ज्यादा है। अगर आप योग एक्सपर्ट और नैचुरोपैथ के तौर पर करियर विकसित करना चाहते हैं तो साढ़े पांच साल का बैचलर ऑफ नैचुरोपैथी एंड योगिक साइंसेज (बीएनवाईएस) कोर्स किया जा सकता है। योग में डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्सेज की बात करें तो पीजी डिप्लोमा इन योग एजुकेशन, पीजी डिप्लोमा इन योग थैरेपी, सर्टिफिकेट कोर्स इन योग, फाउंडेशन कोर्स इन योग, एडवांस योग टीचर्स ट्रेनिंग, मास्टर क्लास फॉर योग टीचर्स जैसे कोर्स उपलब्ध हैं। योग टीचर की सैलरी उनकी योग्यता, स्थान, अनुभव और प्रसिद्धि पर निर्भर करती है। हालांकि शुरुआत में औसतन 10 हजार से 25 हजार की सैलरी पा सकते हैं। बाद में जैसे-जैसे इस क्षेत्र में अनुभव बढ़ता जाता है उसके अनुसार सैलरी और अवसर भी बढ़ते जाते हैं।

इसके अलावा विदेशों में भी योग ट्रेनर्स अच्छे पैकेज पर हायर किए जाते हैं। योग में पीएचडी धारकों को 1 लाख तक सैलरी मिल सकती है। योग एक विज्ञान है जिसे सीखने के लिए योग्य और प्रशिक्षित शिक्षक की जरूरत होती है। योग शिक्षक अपना खुद का काम भी शुरू कर सकते हैं। हमारे देश में ऐसे कई उत्कृष्ट शिक्षण संस्थान हैं जहां इंजीनियरिंग, मेडिकल, लॉ, कॉमर्स और बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन जैसी फील्ड की तर्ज पर योग का प्रोफेशनल तौर पर शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त किया जा सकता है। हमारे देश में योग ट्रेनिंग के प्रतिष्ठित संस्थानों में मोरारजी देसाई नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ योग, नई दिल्ली, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी, उत्तर प्रदेश, देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार, उत्तराखंड, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, उत्तराखंड, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड, पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार, उत्तराखंड, बरकतुल्ला विश्वविद्यालय भोपाल, मध्य प्रदेश, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, मध्य प्रदेश, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, मध्य प्रदेश, लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान ग्वालियर, मध्य प्रदेश, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, मध्य प्रदेश, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय कटनी, मध्य प्रदेश, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हरियाणा, स्वामी विवेकानंद योग अनुसंधान संस्थान बेंगलुरू, कर्नाटक, बिहार स्कूल ऑफ योग मुंगेर, बिहार और कैवल्यधाम योग इंस्टिट्यूट पुणे, महाराष्ट्र शामिल हैं।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अस्तित्व में आने के बाद देश-दुनिया में योग को तेजी से अपनाया जा रहा है। भारत में भी योग के प्रति लोगों का रुझान तेजी से बढ़ता जा रहा है। योग के शरीर और मस्तिष्क पर पडऩे वाले बेहतर और सकारात्मक प्रभाव के कारण लोग इसे अपना रहे हैं। ऐसे में योग अब महज शरीर को स्वस्थ रखने का जरिया नहीं बल्कि एक व्यापक इंडस्ट्री बन गया है जिसमें करिअर बनाने की बेशुमार संभावनाएं हैं। योग के क्षेत्र में डिग्री या डिप्लोमा करने के बाद इस क्षेत्र में सेवाएं देने के लिए भी कई विकल्प मौजूद हैं। योग शिक्षा पाने के बाद आप किसी भी प्राइवेट या सरकारी सेक्टर में जॉब कर सकते हैं। इसके अलावा आप अपना निजी योग सेंटर भी खोल सकते हैं। योग के क्षेत्र में जॉब के प्रमुख विकल्पों में योग टीचर, योग मैनेजर, योग थैरेपिस्ट, योग इंस्ट्रक्टर, योग कंसल्टेंट, योग एडवाइजर, योग स्पेशलिस्ट, योग प्रैक्टिशनर, योग एरोबिक इंस्ट्रक्टर, पब्लिकेशन अफसर (योग), रिसर्च ऑफिसरए योग एंड नेचुरोपैथी शामिल हैं। योग और योगाभ्यास की बढ़ती लोकप्रियता के चलते आज इस क्षेत्र में नौकरी के अवसर पहले की तुलना में कहीं ज्यादा हैं। सरकारी, प्राइवेट या निजी सेंटर खोलकर आप इस क्षेत्र में अपना करिअर बना सकते हैं। आज पूरे विश्व में योग का बहुत बड़ा बाजार है, जिससे लाखों लोगों की आजीविका जुड़ी है। एक रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया में योग सिखाने वाले लोगों की संख्या 20-25 करोड़ है।

पवन कुमार शर्मा

दिल्ली में प्रदूषण को कम करने के लिए सरकार की अनोखी पहल, 15 जून से लागू होगी 'ग्रीष्मकालीन कार्य योजना'

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली तो वैसे देश की राजधानी के तौर पर जानी जाती है लेकिन इसके अलावा प्रदूषण के लिए भी जानी जाती है। अब दिल्ली की केजरीवाल सरकार ने प्रदूषण को कम करने के लिए एक अनोखी पहल को शुरू करने वाली है। इसकी शुरूआत 15 जून से होगी। जिसका नाम ग्रीष्मकालीन कार्य योजना रखा गया है। इस लेख के माध्यम से जानें प्रदूषण से निपटने के लिए वो जरूरी बिंदू।

नई दिल्ली। पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने बृहस्पतिवार को कहा कि राष्ट्रीय राजधानी में वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए दिल्ली की ग्रीष्मकालीन कार्य योजना शनिवार 15 जून से लागू होगी। दिल्ली सचिवालय में पत्रकार वार्ता के दौरान राय ने बताया कि इस ग्रीष्मकालीन कार्य योजना मुख्य रूप से वृक्षारोपण पर ध्यान केंद्रित करेगी।

15 जून से 15 सितंबर तक सरकार ग्रीष्मकालीन कार्य योजना

मालूम हो कि पिछले साल यह कार्य योजना एक मई से लागू हो गई थी, लेकिन अबकी बार लोकसभा चुनाव की आचार संहिता के यह डेढ़ माह देर से शुरू होगी। राय ने बताया, ₹हमने बृहस्पतिवार को एक बैठक की, जिसमें 30 विभागों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इस बार ग्रीष्मकालीन कार्ययोजना का फोकस वृक्षारोपण पर होगा। 15 जून से 15 सितंबर तक सरकार ग्रीष्मकालीन कार्य योजना के 12 प्रमुख बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करके काम करेगी।₹

गोपाल राय ने कहा कि हरित एजेंसियों को अपनी कार्य योजना तैयार करने का निर्देश दिया गया है। राय ने कहा कि 24 मई से 12 जून के दौरान दिल्ली का एक्यूआइ "मध्यम" व "खराब" श्रेणी के बीच रहा। धूल के कण गर्मियों के प्रदूषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

राय ने आगे कहा कि सभी एजेंसियां संयुक्त रूप से 15 जून से 30 जून तक धूल विरोधी अभियान' चलाएंगी। इसके लिए 580 गश्ती दल निरीक्षण करेंगे। वह निगरानी करेंगे कि निर्माण स्थलों पर धूल नियंत्रण उपायों का पालन किया जा रहा है या नहीं।

प्रदूषण से निपटने के लिए ग्रीष्मकालीन कार्य योजना के मुख्य बिंदू

1. वृक्षारोपण : वृक्षारोपण अभियान को लेकर 18 जून को सभी हरित एजेंसियों के साथ दिल्ली सचिवालय में बैठक बुलाई गई है।

2. वृक्ष प्रत्यारोपण नीतिः जो पेड़ प्रत्यारोपित किए जा रहे हैं, उनमें से ज्यादा कैसे जीवित रहें, इस पर बल दिया जा रहा है। प्रत्यारोपित पेड़ों के जीवित रहने की दर में वृद्धि की निगरानी के लिए स्पेशल टीम का गठन।

3 . डस्ट प्रदूषण : 15 जून से 30 जून तक धूल निरोधक चलेगा। धूल प्रदूषण रोकने के लिए 85 मैकेनिकल रोड स्वीपिंग (एमआरएस) मशीनों और 276 स्प्रिंकलर की तैनाती की जाएगी। पूरी दिल्ली में 580 पेट्रोलिंग टीम निगरानी करेगी। सभी 13 चिन्हित में हाटस्पाट कार्य योजना का क्रियान्वित किया जाएगा और वायु प्रदूषण स्रोतों का निवारण किया जाएगा।

4 .ओपन बर्निंग : खुले मे कूड़ा जलाने को रोकने के लिए 1269 कर्मियों की 573 पेट्रोलिंग टीम निगरानी करेगी, 525 कर्मियों की 235 टीमें रात्रि में तथा 694 कर्मियों की 338 टीमें दिन में पेट्रोलिंग करेंगी। लैंडफिल साइटों पर आग लगने की घटनाओं को रोकने के लिए एसओपी के आधार पर कार्य।

5 .औद्योगिक प्रदूषण : डीपीसीसी व डीएसआइआइडीसी की 33 टीमें औद्योगिक क्षेत्र में अवैध रूप से कचरे की डम्पिंग की निगरानी के लिए तैनात की गई हैं।

6. नगर वनों का विकास : सात नगर वनों का सुधार किया जाएगा जिसमे पर्यावरण के अनुकूल ट्रेल्स, साइकिल मार्ग, पक्षी देखने के डेक, कैनोपी वाक, बैठने के लिए जगह, ओपन इंटरप्रिटेशन साइनेज आदि का निर्माण किया जाएगा। तीन नए नगर वन बनाने का प्रस्ताव किया जा रहा है।

7. जलाशयों का विकास : दिल्ली की 1367 झीलों की उपस्थिति की हकीकत जांची जाएगी। भूमि स्वामित्व एजेंसियों द्वारा 73 जलाशयों के पुनरुद्धार का कार्य किया जाएगा।

8. पार्क का विकास (हरित पार्क) : 1500 पार्कों- उद्यानों के विकास और रखरखाव के लिए 300 आरडब्ल्यूए/गैर-सरकारी संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

9 . ई - वेस्ट इको पार्क : ई-वेस्ट कूड़े से होने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए दिल्ली में ई-वेस्ट इको पार्क बनाया जा रहा है। इसके प्रबंधन और स्थापना के कार्य में तेज़ी लाई जाएगी।

10. इको क्लब एक्टिविटी : दिल्ली के दो हजार स्कूलों व कालेजों में इको क्लब चल रहे हैं। सक्रिय क्लबों में स्कूल-कालेज से 10-20 इको-क्लब शिक्षकों की एक कोर टीम भी गठित की जा रही है।

11. ठोस कचरा प्रबंधन : ठोस कचरा प्रबंधन के अंतर्गत निगरानी की जाएगी। तीनों डम्पिंग साइट पर बायो माइनिंग।

12 . पड़ोसी राज्यों से संवाद : प्रदूषण बढ़ाने में आसपास स्थित राज्यों के कारक भी प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इसी कारण पड़ोसी राज्यों के साथ संवाद स्थापित किया जाएगा। पराली जलाने को नियंत्रित करने की तैयारी।

'आतिशी को पानी के लिए सोनिया गांधी और राहुल गांधी...', भाजपा सांसद ने जलमंत्री पर कसा तंज

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में जल संकट पर राजनीति जोरों पर है। फिर चाहे भाजपा हो या कांग्रेस दोनों ही AAP सरकार पर हमले का कोई मौका नहीं छोड रहे हैं। इसी बीच नवनिर्वीचित भाजपा सांसद रामवीर सिंह और बांसुरी स्वराज ने जलमंत्री आतिशी पर हमला करते हुए कहा कि वह टैंकर माफिया का बचाव कर रही हैं। हिमाचल से पानी के लिए उन्हें सोनिया गांधी और राहुल गांधी से मदद मांगनी चाहिए।

नई दिल्ली। दक्षिणी दिल्ली के सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी (Ramvir Singh Bidhuri) ने कहा, दिल्ली की जल मंत्री आतिशी प्रतिदिन हरियाणा पर दिल्ली का पानी रोकने का झूठे आरोप लगाती हैं। उनका कहना था कि हिमाचल प्रदेश दिल्ली को 137 क्यूसेक अतिरिक्त पानी देने को तैयार है, परंतु हरियाणा सरकार (Haryana) इसमें बाधा डाल रही है। वहीं, हिमाचल प्रदेश ने सुप्रीम कोर्ट में स्पष्ट कर दिया है कि उसके पास दिल्ली को देने के लिए अतिरिक्त पानी नहीं है।

आतिशी पर लगाया ये आरोप

सांसद ने कहा, जल मंत्री यह आरोप लगाती थी कि मूनक नहर से पानी चोरी रोकने के लिए उपराज्यपाल ने पुलिस को निर्देश नहीं दिया है। अब पुलिस की तैनाती होने पर अब वह टैंकर माफिया का बचाव करते हुए कह रही हैं कि इससे पानी किल्लत की समस्या दूर नहीं होगी। उन्होंने कहा कि हिमाचल में कांग्रेस की सरकार है।

राहुल गांधी और सोनिया गांधी से पानी के लिए मांगे मदद-रामवीर

आम आदमी पार्टी (AAP News) व कांग्रेस आइएनडीआइ गठबंधन में शामिल हैं इसलिए आतिशी (Atishi) को हिमाचल से पानी के लिए सोनिया गांधी और राहुल गांधी (Rahul Gandhi) से गुहार लगानी चाहिए।

नई दिल्ली की सांसद बांसुरी स्वराज (Bansuri Swaraj) ने कहा, जल वितरण में कुप्रबंधन, पानी की बर्बादी व चोरी और समर एक्शन प्लान को लेकर गंभीरता नहीं होने के कारण दिल्ली के कई क्षेत्र में पानी की समस्या है। शीला दीक्षित सरकार के समय दिल्ली जल बोर्ड 600 करोड़ के लाभ में था।

भ्रष्टाचार के कारण अब 73000 करोड़ के घाटे में पहुंच चुका है। भ्रष्टाचार व कुप्रबंधन से उपलब्ध पेयजल का 52 पानी प्रतिशत बर्बाद हो रहा है। उन्होंने कहा, सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा व हिमाचल प्रदेश का पक्ष सुनने के बाद दिल्ली को फटकार लगाई है। पड़ोसी राज्यों व ऊपरी यमुना नदी बोर्ड के साथ बात कर समस्या का समाधान निकालने को कहा है।

सीबीएसई नौवीं और 11वीं में कराएगा ओपन बुक परीक्षा, जानें लेटेस्ट अपडेट

सीबीएसई बोर्ड अब परीक्षाओं में अहम बदलाव करने की तैयारी में जुटा है। एनसीएफएसई कि सिफारिश के मुताबिक नौवीं और 11वीं के लिए ओपन बुक परीक्षा आयोजित होगी। इसमें 10वीं और 12वीं को शामिल नहीं किया गया है। बोर्ड के अधिकारियों ने बताया कि पायलट प्रोजेक्ट के रूप में 20 से 25 स्कूल शुरू में जुड़ेंगे। इसमें परीक्षार्थियों को परीक्षा के दौरान किताब खोलने की सुविधा मिलती है।

नई दिल्ली। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) बोर्ड परीक्षाओं में अहम बदलाव करने की तैयारी कर रहा है। बोर्ड ने फैसला किया है कि स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (एनसीएफएसई) कि सिफारिश के अनुसार नौवीं और 11वीं के लिए ओपन बुक परीक्षा आयोजित की जाएगी। रुपरेखा के तहत विद्यार्थियों को एक शैक्षणिक वर्ष के दौरान प्राप्त वास्तविक ज्ञान के आधार पर मूल्यांकन करने की परिकल्पना की गई है।

10वीं और 12वीं को नहीं किया गया शामिल

इसमें 10वीं और 12वीं को शामिल नहीं किया गया है। इस परीक्षा के मूल्यांकन के विभिन्न पहलुओं की जांच करने के लिए कुछ चुनिंदा स्कूलों में यह परीक्षा पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर शुरु की जाएगी। इसमें परीक्षा को पूरा करने में विद्यार्थियों द्वारा लिया गया न्यूनतम समय, रचनात्मक उद्देश्यों के लिए इसकी उपयोगिता और इसके बारे में हितधारकों की अवधारणाओं का मूल्यांकन होगा।

पायलट अध्ययन अगले वर्ष फरवरी-मार्च में होगा शुरू

बोर्ड अधिकारियों के मुताबिक ओपन-बुक परीक्षाओं को के प्रारुप को अंतिम रूप दिया जा रहा है। पायलट अध्ययन अगले वर्ष फरवरी-मार्च में इस शैक्षणिक वर्ष के अंत में होने वाली अंतिम परीक्षाओं के दौरान आयोजित किया जाएगा।

20 से 25 स्कूल इस पायलट प्रोजेक्ट में होंगे शामिल-बोर्ड

बोर्ड अधिकारियों ने बताया कि पायलट के लिए डिजाइन पर अभी भी काम किया जा रहा है, कि इसे कितने स्कूलों में आयोजित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि संभवत 20 से 25 स्कूल इस पायलट प्रोजेक्ट में शामिल होंगे।

इससे पहले, बोर्ड ने दिसंबर 2023 में आयोजित अपनी गवर्निंग बाडी (जीबी) की बैठक के दौरान नौवीं से 12वीं के लिए ओबीई पर निर्णय लिया था। बैठक के दौरान, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान और जीव विज्ञान सहित विभिन्न विषयों के लिए इन सभी कक्षाओं के लिए एक ओपन-बुक परीक्षा का प्रारूप बनाने का निर्णय लिया गया था।

परीक्षार्थियों को परीक्षा के दौरान मिलती है यह सुविधा

सीबीएसई स्कूलों के प्रधानाचार्यों के मुताबिक ओपन बुक परीक्षा प्रारूप में विद्यार्थी अपने नोट्स और अध्ययन सामग्री अपने साथ परीक्षा केंद्र पर ले जा सकते हैं और परीक्षा देते समय उनका संदर्भ ले सकते हैं। जबकि सामान्य परीक्षा में यह सब अनुमति नहीं होती है।

उनके मुताबिक इस तरह की परीक्षा में अधिकतम शोध आधारित प्रश्न होते हैं। इसमें परीक्षार्थी को परीक्षा के दौरान किताबें खोलने और उन्हें देखने की अनुमति होती है। परीक्षा में परीक्षार्थी को अपनी वैचारिक क्षमता और आलोचनात्मक सोच का प्रदर्शन करना होता है।

पानी की बूंद-बूंद को मोहताज दिल्ली...

भीषण गर्मी से बेहाल और बूंद-बूंद पानी को मोहताज दिल्ली को सुप्रीम कोर्ट के साथ-साथ हिमाचल प्रदेश से भी आज तगड़ा झटका लगा। जब उसने कोर्ट में यह कहा कि उसके पास दिल्ली को देने के लिए पानी नहीं। केजरीवाल सरकार की मंत्री आतिशी ने अपने सोशल मीडिया एक्स पर एक लंबा-चौड़ा पोस्ट किया। जिसमें उन्होंने South Delhi Mains पाइपलाइन नेटवर्क निरीक्षण किया।

नई दिल्ली। भीषण गर्मी के कारण पानी की किल्लत से जूझ रही दिल्ली को गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट से करारा झटका लगा। जब हिमाचल प्रदेश ने कोर्ट में अपने ही बयान पर यू-टर्न लेते हुए कहा कि उसके पास दिल्ली को देने के लिए पानी नहीं है।

दिल्ली की केजरीवाल सरकार (Arvind Kejriwal) की मंत्री आतिशी (Atishi) ने अपने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा कि सोनिया विहार WTP से पूरी दक्षिणी दिल्ली के लाखों लोगों तक पानी पहुँचाने वाली South Delhi Mains पाइपलाइन नेटवर्क का जलबोर्ड और राजस्व विभाग के उच्चाधिकारियों के साथ निरीक्षण किया।

दिल्ली सरकार शहर भर में ADMs और SDMs द्वारा पेट्रोलिंग के ज़रिए सुनिश्चित कर रही है कि, मुख्य पाइपलाइनों से लीकेज के कारण एक बूँद पानी भी बर्बाद न हो। जल संकट के दौरान, जब दिल्ली को कम पानी मिल रहा है, WTPs का production घट गया है। ऐसे में पानी की बर्बादी बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

इससे पहले आम आदमी पार्टी ने अपने ऑफिशियल अकाउंट से सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हुए लिखा कि दिल्ली सरकार में मंत्री आतिशी ने अक्षरधाम के पास जल वितरण नेटवर्क का निरीक्षण किया। दिल्ली में इस समय पानी की क़िल्लत चल रही है, इसलिए पानी की एक भी बूंद बर्बाद नहीं होनी चाहिए। हम सभी पाइपलाइंस को चेक कर रहे हैं कि कहीं पानी लीक तो नहीं हो रहा है।

चांदनी चौक के मारवाड़ी कटरा में लगी भीषण आग, फायर ब्रिगेड की 30 से ज्यादा गाड़ियां काबू पाने में जुटीं

चांदनी चौक के मारवाड़ी कटरा में आज शाम को भयंकर आग लग गई। मौके पर 30 दमकलकर्मी की गाड़ियां आग बुझाने के काम में जुट गई हैं। फिलहाल आग बुझाने का काम चल रहा है। इतनी भयंकर आग कैसे लगी इस संबंध में पुख्ता जानकारी की अभी प्रतीक्षा है। पुलिस की टीम भी मौके पर तैनात हैं।

दिल्ली। चांदनी चौक के मारवाड़ी कटरा में आज शाम को भयंकर आग लग गई। मौके पर 30 दमकलकर्मी की गाड़ियां आग बुझाने के काम में जुट गई हैं। फिलहाल आग बुझाने का काम चल रहा है। इतनी भयंकर आग कैसे लगी इस संबंध में पुख्ता जानकारी की अभी प्रतीक्षा है। पुलिस की टीम भी तैनात है।

गाजियाबाद के मकान में आग लगने से पांच लोग जिंदा जले

बुधवार को लोनी थाना क्षेत्र के बहेटा में एक मकान में भीषण आग लगने से 5 लोग जिंदा जले। घर में कुल सात लोग थे जिसमें से दो लोगों को बचा लिया गया था। पांच लोग मौके पर फंस गए थे। आसपास के लोगों ने पास के घर से सीढ़ियां लगाकर दोनों लोगों को बाहर निकाला।

इस अग्निकांड में 30 एकड़ हरित क्षेत्र जलकर खाक

इससे पहले बुधवार को पूर्वी दिल्ली के असिता ईस्ट के पिछले हिस्से में आग लग गयी। आज शाम सवा पांच बजे आग लगी थी। बताया जा रहा है असिता ईस्ट के इस पिछले हिस्से में असामाजिक तत्व नशा करते हैं जिसके बाद यहां माचिस से आग लगा देते हैं। मौके पर आठ दमकल की गाड़ियों ने दो घंटे में काबू पाया। इस अग्निकांड में 30 एकड़ हरित क्षेत्र जलकर खाक हो गया।

समाज में सिख समुदाय के प्रति बढ़ रही नसलीय हिंसा गंभीर चिंता का विषय: परमजीत सिंह सरना

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली। हरियाणा के कंथल में सिख युवक को खालिस्तानी और अलगाववादी कहकर पीटने की घटना बेहद शर्मनाक और निंदनीय है, यह सिख समुदाय के प्रति दोयम दर्जे के नागरिक होने की मानसिकता को दर्शाती है। यह कहना है शिरोमणि अकाली दल दिल्ली इकाई के अध्यक्ष परमजीत सिंह सरना का।

यहां जारी बयान में सरदार सरना ने कहा कि यह घटना दर्शाती है कि देश के लिए सबसे अधिक बलिदान देने वाले सिख भाईचारे से आज भी अपनी देशभक्ति साबित करने के लिए कहा जाता है। इस तरह सरेआम पिटाई करना और अलगाववादी कहकर संबोधित करना नसलीय हिंसा का स्पष्ट उदाहरण है इसलिए इसे जातीय अपराध के दायरे में में लाकर हरियाणा सरकार को दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। भाजपा सरकार के लिए विचार करने का समय है कि एक तरफ तो वो सिखों को अपने करीब लाने की कोशिश कर रही है लेकिन दूसरी तरफ उसके नेता हमेशा सिखों के खिलाफ नफरत का नैरेटिव गढ़ने में लगे रहते हैं।

10 साल से एक ही स्कूल में काम कर रहे दिल्ली के शिक्षकों को मिल सकता है ट्रांसफर, इस कारण से सरकार ने लिया फैसला

शिक्षा निदेशालय ने दिल्ली के सरकारी स्कूलों में एक ही जगह पर 10 साल से अधिक समय से काम करने वाले शिक्षकों को ट्रांसफर के लिए ऑनलाइन आवेदन करने का आदेश दिया है। वहीं साथ ही यह भी कहा गया है कि जो आवेदन नहीं करेंगे निदेशालय उन्हें आधिकारिक आवश्यकता के मुताबिक किसी भी स्कूल में तबादला कर देगा।

नई दिल्ली। शिक्षा निदेशालय ने राजधानी के सरकारी स्कूलों में एक ही जगह पर 10 साल से अधिक समय से कार्यरत शिक्षकों को ट्रांसफर के लिए आनलाइन आवेदन करने के लिए कहा है। निदेशालय के इस आदेश पर चिंता जाहिर करते हुए शिक्षक संघ ने तर्क दिया है कि इस नीति से अनुभवी शिक्षकों की कमी हो सकती है।

स्कूलों में ट्रांसफर के लिए करना होगा ऑनलाइन आवेदन

इसके साथ ही निदेशालय की निर्णय लेने की प्रक्रिया में भ्रष्टाचार की संभावना हो सकती है। उन्होंने कहा कि आदेश के तहत एक ही स्कूल में लगातार 10 साल पूरे करने वाले सभी शिक्षकों को आपसी सहमति या सामान्य चयन के आधार पर अधिकतम संख्या में स्कूलों में ट्रांसफर के लिए अनिवार्य रूप से ऑनलाइन आवेदन करना होगा।

आवेदन नहीं करने वाले को किसी भी स्कूल में हो जाएगा तबादला

वहीं, जो आवेदन नहीं करेंगे निदेशालय उन्हें आधिकारिक आवश्यकता के अनुसार किसी भी स्कूल में तबादला कर देगा। राजकीय विद्यालय शिक्षक संघ (जीएसटीए) के पदाधिकारी ने कहा कि दिशानिर्देशों को रद्द किया जाना चाहिए क्योंकि लंबे समय तक एक ही स्कूल में तैनात शिक्षक को क्षेत्र और जनसांख्यिकी के बारे में काफी अनुभव और समझ जैसे लाभ मिल सकते हैं। शिक्षक माता-पिता से परिचित हो जाते हैं, इस प्रकार छात्रों को अधिक प्रभावी ढंग से शिक्षित करते हैं।

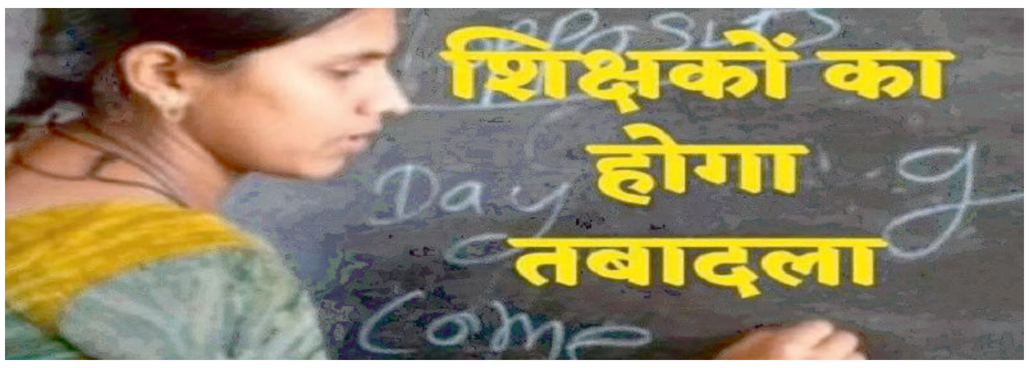

सावधान ! अगर बकरीद पर किया यह काम तो यूपी पुलिस लेगी सख्त एक्शन, CCTV से होगी निगरानी

बकरीद आने वाली है। अब उसको लेकर प्रशासन भी अपनी तैयारियों में जुटा है। इसी को देखते हुए नोएडा शहर में कोई असामाजिक घटना न घटित हो इसको लेकर पुलिस और प्रशासन के अधिकारियों ने आगामी त्योहार ईद उल-अजहा (बकरीद) को लेकर शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील की है। साथ ही कहा है कि माहौल खराब करने वाले सभी लोगों पर कार्रवाई होगी।

परिवहन विशेष न्यूज

नोएडा। सेक्टर-108 स्थित पुलिस आयुक्त कार्यालय में गुरुवार को पुलिस और प्रशासन के अधिकारियों ने आगामी त्योहार ईद उल-अजहा (बकरीद) को लेकर शांति व्यवस्था व आपसी सौहार्द बनाए रखने के उद्देश्य से धर्मगुरुओं व संभ्रांत नागरिकों के साथ बैठक की।

पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह ने कहा कि शहर के सभी धर्मगुरुओं, संभ्रांत नागरिकों के साथ संवाद करते हुए आगामी त्योहार को शांतिपूर्वक ढंग से मनाने, किसी भी व्यक्ति की धार्मिक भावनाओं को ठेस न पहुंचाने व आपसी सौहार्द बनाए रखने के बारे में बताया गया।

कुर्बानी से संबंधित वीडियो बनाकर गलत तरीके से न करें पोस्ट

लोग अपने आसपास के लोगों को जागरूक करें कि इंटरनेट मीडिया पर किसी भी प्रकार की अफवाह या कुर्बानी से संबंधित वीडियो बनाकर गलत तरीके से पोस्ट न करें।।ऐसा करने वालों की पहचान करते वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। पुलिस टीम द्वारा प्रमुख स्थानों, संवेदनशील व धार्मिक स्थलों के आसपास सीसीटीवी कैमरों से निगरानी की जाएगी।

आपत्तिजनक टिप्पणी व धार्मिक भावनाएं भड़काने का न करें प्रयास

इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म पर पुलिस द्वारा लगातार निगरानी की जा रही है। यदि कोई भी व्यक्ति किसी भी इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म पर कोई आपत्तिजनक टिप्पणी, धार्मिक भावनाएं भड़काने या दुष्प्रचार करने का प्रयास करेगा तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

पुलिस आयुक्त ने बैठक के दौरान धार्मिक गुरुओं, संभ्रांत नागरिकों से संवाद के दौरान उनसे उनकी समस्याओं के बारे में भी पूछा। कहा कि कोई भी परेशानी होने पर तुरंत संबंधित पुलिस अधिकारी, नजदीकी कोतवाली और डायल 112 पर सूचना दें।

जिससे तत्काल कार्रवाई की जा सके। बैठक के दौरान उनसे सुझाव भी मांगे गए। इस मौके पर जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा, अपर पुलिस आयुक्त (मुख्यालय) बबलू कुमार, अपर पुलिस आयुक्त (कानून एवं व्यवस्था) शिव हरि मीणा, सभी जोन के डीसीपी, सभी एडीसीपी मौजूद रहें।

नमाज को लेकर चल रही तैयारियां

बकरीद (Bakrid 2024) को लेकर मस्जिदों में तैयारियां शुरू हो गई। शुक्रवार को जुमा की नमाज (Friday prayer) के दौरान बकरीद की नमाज (Eid ki Namaz) का समय भी बताया जाएगा। बकरीद के मद्देनजर सेक्टर-8 स्थित जामा मस्जिद के आसपास कुर्बानी के लिए बकरों की मंडी लगनी शुरू हो गई है। इसके अलावा सेवई, फैन और मावा की दुकान लग रही है। हालांकि अभी कम ही खरीदार नजर आ रहे हैं।

सड़क किनारे खड़ी रेहड़ी में धमाके के बाद लगी आग, राहगीरों में मचा हड़कंप; हादसे की ये थी वजह

साहिबाबाद के कौशांबी में सड़क किनारे खड़ी रेहड़ी में तेज धमाके के साथ सिलेंडर फटा। जिसके बाद आग लग गई। कौशांबी थाना क्षेत्र में पैसेफिक मॉल के सामने यह घटना घटी है। धमाका इतना तेज था कि काफी दूर तक इसकी आवाज सुनाई दी। आसपास के लोग सहम गए। मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई।

साहिबाबाद। कौशांबी में सड़क किनारे लगी रेहड़ी में गुरुवार दोपहर को अचानक धमाके के साथ सिलेंडर फटने से आग लग गई। इससे आसपास की दो रेहड़ी भी चपेट में आ गई। सूचना पर पहुंचे अग्निशमन कर्मियों ने आग पर काबू पाया। आग से कोई जनहानि नहीं हुई।

आज दोपहर धमाके के साथ सिलेंडर फटा, फिर लगी आग

कौशांबी थाना क्षेत्र महाराजपुर बॉर्डर के पास सड़क किनारे रेहड़ी लगी हैं। गुरुवार दोपहर करीब दो बजे तेज धमाके के साथ सिलेंडर फटने से आग लग गई। धमाका इतनी तेज था कि दूर तक आवाज गई।

फायर स्टेशन से आई दलकल की गाड़ी ने पाया काबू

आसपास के लोग सहम गए। मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। रेहड़ी आग की चपेट में आग गई। आग आसपास की दो और रेहड़ी में लग गई। सूचना पर वैशाली फायर स्टेशन से एक गाड़ी मौके पर पहुंची कड़ी मशक्कत कर आग पर काबू पाया।

आग से नहीं हुआ कोई हताहत

आग से कोई जनहानि नहीं हुई है। मुख्य अग्निशमन अधिकारी राहुल पाल ने बताया कि आग पर पूर्ण रूप से काबू पा लिया गया। आग से कोई हताहत नहीं हुआ है।

62 वर्षीय खलील नमक व्यक्ति पर लाठी डंडों से जानलेवा हमला आरोपी फरार

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

मेरठः थाना किठौर के अंतर्गत गांव राधना इनायत पुर निवासी 62 वर्षीय खलीक अहमद पर गुजिश्ता 9 मई 2024 को सुबह सवेरे नंगला सलेमपुर निवासी कुछ गुंडों ने उस समय जान लेवा हमला कर के बुरी तरह घायल करदिया था जब वो अपने खेत पर काम करने जारहा था

हमले में किसान के दोनों हाथों और पैर में फ्रैक्चर होगाया था तब से पीढ़ित का मेरठ मेडिकल में इलाज चल रहा हे

जानकारी के अनुसार किठौर पुलिस ने दबंगों द्वारा किए गए इस जान लेवा हमले को हादसा बताते हुवे एक्सीडेंट की रिपोर्ट दर्ज करके 172/24 मुकदमा दर्ज करलिया था जब समाचार पत्रों में इस बाबत खबरें छपी तो आला अधिकारियों ने संज्ञान लेते हुवे मुकदमे में गहरी छान बीन के आदेश दिए जिसके बाद छेत्रीय अधिकारी(सी ओ) किठौर के निर्देश पर मुकदमे में मार पीट की धाराएं जोड़ दी गईं मगर एक महीना गुजरने के पश्चात अभी तक मामले में कोई ग्रफ्तारी नहीं की गई हे जिसे लेकर पीढ़ित पक्ष सख़्त नाराज़ है और उसने इस मामले की आई जी मेरठ से शिकायत की हे ।जानकारी के अनुसार आई जी मेरठ ने अधिकारियों से मुकदमे की आख्या मांगी है जिसके बाद लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों पर कार्रवाई हो सकती है दूसरी ओर मामले में एक और चौंकाने वाला तथ्य सामने आया है, पीढ़ित पक्ष ने किठौर सीएचसी अस्पताल के मेडिकल अधिकारी पर आरोपियों से मिली भगत का आरोप लगाते हुवे MLPC में पीढ़ित की तमाम चोटों का ज़िक्र न करने का संगीन आरोप लगाया है पीढ़ित पक्ष का कहना हे की पहले तो आरोपी दबंगों के दबाव में पीढ़ित खलीक की MLPC नहीं की गई और बिना मेडिकल किए हुवे ज़ख्मी को मेरठ मेडिकल कॉलेज में रेफर करदिया गया जब हल्के के दरोगा ने इस बाबत किठौर अस्पताल अधिकारियों से संपर्क किया तो बताया गया की ज़ख्मी की हालत बहुत नाज़ुक थी और उसकी जान को खतरा था इसलिए समय ज़ाए न करते हुवे तुरंत मेडिकल कालेज रेफर करदिया गया था। हालांकि पीढ़ित का 9 दिन बाद मेडिकल किया गया मगर परिजनों के अनुसार बड़ी लापरवाही बरतते हुवे पीढ़ित की कई चोटों का ज़िक्र MLPC में नही किया गया हद तो तब होगई जब xray सामने होने के बावजूद किठौर मेडिकल अधिकारी ने पीढ़ित के टूटे हुवे दाएं हाथ के फ्रेचर का ज़िक्र नहीं किया और अन्य कई गुम चोटों को पीढ़ित के बताने के बावजूद छोड़ दिया गया और इस बड़ी लापरवाही के कारण पीढ़ित के उस फ्रैक्चर का इलाज नहीं होपाया और अब पीढ़ित का एक हाथ स्थाई रूप से टेढ़ा होगया है और उसके इलाज में दिक्कत आराही है उधर पीढ़ित खलीक के परिजनों का कहना है की उसके साथ अन्याय होराहा है और स्थानीय पुलिस से लेकर अस्पताल के डाक्टरों तक सब आरोपी दबंगों से मिले हुवे हैं इसी लिए मामले में अब तक किसी आरोपी की गिरफ्तारी नहीं की गई है।

दरअसल गांव नंगला सलेमपुर मेरठ के खेतों में कुछ गुंडो ने ज़मीनी विवाद के चलते 62 वर्ष्य खलीक पर लाठी डंडों से जानलेवा हमला कर दिया था जिस से उसे गंभीर चोटें आई थी तब से ही मामले को लेकर स्थानीय पुलिस आरोपों के घेरे में हे दूसरी ओर आई जी मेरठ द्वारा पुलिस अधिकारियों को अपनी कार्य शैली में बदलाव लाने और लापरवाही से बचने के सख्त निर्देश जारी किए गय हैं ऐसे में अगर पुलिस प्रशासन अपराधियों के प्रति ऐसा ढुल मूल रवय्या अपनाता रहा तो उन पर आने वाले समय में कार रवाई होना निश्चित हे ।बहरहाल आरोप संगीन हैं अब देखना हे की इस मामले में आरोपियों की ग्रफ्तारी कब होती है पीढ़ित का कहना ये भी हे की उसका पूरा परिवार इस समय बहुत ज्यादा डरा हुआ है और अगर इन आरोपियों और असामाजिक तत्वों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई नहीं की गई तो प्रार्थी का परिवार गांव से पलायन करने पर मजबूर होजाएगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति कम होता मोदी का समर्पण भाव

संजय सक्सेना

संभवत: यह पहला चुनाव था, जिसमें भाजपा आलाकमान ने प्रत्याशियों के चयन से लेकर चुनावी रणनीति तैयार करने तक में कहीं भी संघ से विचार विमर्श करना उचित नहीं समझा। ऐसे में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी बीजेपी लीडरशिप से मिलने के लिये अपनी तरफ से कोई पहल नहीं की।

लोकसभा चुनाव में बीजेपी की उत्तर प्रदेश में जो फजीहत हुई है, उसका ठीकरा एक-दूसरे के सिर फोड़ने की राजनीति के चलते राज्य में बीजेपी नेताओं के बीच आपसी वैमस्यता और गुटबाजी बढ़ती जा रही है। गुटबाजी का आलम यह है कि यह किसी एक स्तर पर नहीं ,नीचे से लेकर ऊपर तक तो दिखाई पड़ ही रही है, इसके अलावा इसकी तपिश से दिल्ली भी नहीं बच पाया है। बल्कि राजनीति के कई जानकार और पार्टी से जमीनी स्तर से जुड़े नेता और कार्यकर्ता भी इस बात से आहत हैं कि अबकी से टिकट वितरण में खूब मनमानी की गई, जिसका खामियाजा पार्टी को भुगतना पड़ रहा है। बात यहीं तक सीमित नहीं है सूत्र बताते हैं कि प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भी टिकट बंटवारे के तौर-तरीको से आहत दिखाई दे रहा है। बस फर्क यह है कि यह लोग सार्वजनिक रूप से ऐसा कुछ नहीं बोल रहे हैं जिससे विपक्ष को हमलावर होने का मौका मिल जाये। लोकसभा चुनाव में 80 की 80 सीटें जीतने का दावा करने वाली बीजेपी आधी सीटें भी नहीं जीत पाई। भाजपा की करारी हार के पीछे भले ही कई कारण गिनाए जा रहे हों, पर संघ से दूरी भी एक बड़ी वजह मानी जा रही है।

संभवतः यह पहला चुनाव था, जिसमें भाजपा आलाकमान ने प्रत्याशियों के चयन से लेकर चुनावी रणनीति तैयार करने तक में कहीं भी संघ से विचार विमर्श करना उचित नहीं समझा। ऐसे में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी बीजेपी लीडरशिप से मिलने के लिये अपनी तरफ से कोई पहल नहीं की। आमतौर पर चुनाव में जमीनी प्रबंधन में सहयोग करने वाले संघ के स्वयंसेवक इस चुनाव में कहीं नहीं दिखे। जिलों में न तो संघ और भाजपा की समन्वय समितियां दिखीं और न ही चैक-चैराहों से गांव की चैपाल तक में अमूमन होने वाली संघ परिवार की बैठकें कहीं नहीं हुईं। कम मतदान पर लोगों को घर से निकालने वाले स्वयं सेवक भी इस चुनाव में कहीं नहीं दिखे।

खैर, जिस तरह से संघ और बीजेपी के बीच दूरियां बढ़ रही हैं, उसके केन्द्र में कहीं न कहीं बीजेपी आलाकमान और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नजर आ रहे हैं। मोदी के पीएम बनने के बाद पिछले दस वर्षो में यह दूरियां काफी तेजी से बढ़ी हैं। संघ से जुड़े कुछ बड़े स्वयं सेवकों के अनुसार इसकी मुख्य वजह पार्टी और सरकार द्वारा कोई भी निर्णय लेने के दौरान संघ परिवार के संगठनों के साथ संवादहीनता बनाये रखना। माना जाता है कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के बयान ने कि भाजपा अब पहले की तुलना में काफी मजबूत हो गई है। संघ और भाजपा के बीच की खाई को और चैड़ा करने का काम किया। संघ के कुछ पदाधिकारी कहते हैं कि संघ अचानक तटस्थ होकर नहीं बैठा। 2019 के लोकसभा चुनाव में मिले परिणामों के बाद आत्ममुग्ध भाजपा ने अपने सियासी फैसलों में संघ परिवार को नजरअंदाज करना शुरू कर दिया था। केन्द्र की मोदी सरकार और भाजपा की कुछ राज्य सरकारों ने संघ परिवार की अनदेखी कर एक के बाद एक कई ऐसे फैसले कर डाले, जिनसे संगठन की साख और सरोकारों पर विपरीत प्रभाव पड़ना लाजिमी था, इसलिए संघ ने भी अपनी भूमिका समेट ली।

संघ और बीजेपी के बीच की खाई इस साल की शुरूआत से ही गहराने लगी थी। अयोध्या में श्रीरामलला के प्राण-प्रतिष्ठा को लेकर भी कुछ मतभेद उभरे थे, जो लोकसभा चुनाव में टिकट वितरण में बीजेपी की मनमानी के चलते और गहरा गया। परिणाम स्वरूप उत्तर प्रदेश में भाजपा को तगड़ा झटका लगा, वहीं इंडी गठबंधन को बड़ी ताकत मिली। यूपी में जो एनडीए 2019 में 64 सीटें जीतने में सफल रहा था, वह 2024 में 36 सीटों पर सिमट गया। यानी पांच साल में सीधे 28 सीटों का नुकसान, जबकि बीजेपी सभी 80 सीटें जीतने का दावा रही थी। वहीं इंडी गठबंधन मतलब सपा-कांग्रेस जो 2019 के चुनावों में 6 सीट जीत सके थे, उन्होंने इस बार 43 सीटों पर परचम लहरा दिया। बात दें 2019 का चुनाव सपा-बसपा मिलकर लड़े थे, वहीं कांग्रेस अकेले मैदान में कूदी थी, जिसमें सपा की पांच और कांग्रेस की एक सीट पर जीत हुई थी, इस तरह आज का इंडी गठबंधन 2019 में छहःसीट जीत पाया था। दस सीटों पर बसपा का कब्जा हुआ था। भाजपा के इस बेहद खराब प्रदर्शन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नाराजगी को बड़ा कारण माना जा रहा था। इसी क्रम में हाल ही में दिये गये आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के बयान को भी जोड़कर देखा जा रहा है।

अतीत के पन्नों को पलटा जाये तो बात जुलाई 2021 की है। करीब 6 महीने बाद यूपी में विधानसभा चुनाव 2022 होना था। राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ जमीनी स्तर बीजेपी को मजबूती प्रदान करने के लिये पूरी तरह से मैदान में डटा हुआ था। संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले यूपी विधान सभा चुनाव 2022 के चलते नागपुर छोड़कर लखनऊ में प्रवास करने लगे थे। उन्हें लखनऊ में रहकर प्रदेश के राजनीतिक माहौल को मजूबत करने के मिशन पर लगाया गया था। वहीं भैया जी जोशी राम मंदिर निर्माण प्रॉजेक्ट के संरक्षक थे। इस दौरान बीजेपी के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बीएल संतोष और प्रभारी राधा मोहन सिंह ने लखनऊ प्रवास में संघ के अहम नेताओं के साथ बैठक की थी। जिसमें 2022 के चुनाव को लेकर संघ ने फीडबैक दिए थे। इसमें सत्ता विरोधी लहर की चुनौती से निपटना, कार्यकर्ताओं से नाराजगी को दूर करना, प्रत्याशियों को लेकर जनता में रोष आदि कंट्रोल करने का संदेश था ।सब कुछ ठीकठाक चल रहा था।

उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव चरण दर चरण आगे बढ़ा तो आरएसएस का ये सहयोग जमीन पर दिखाई देने लगा। भाजपा को एंटी इनकमबैंसी का जो नुकसान हो रहा था, उसे संघ ने हर विधानसभा में 400 से 500 छोटी बड़ी बैठकें कर पाटने का काम किया। वोटरों को जागरूक करना उन्हें बूथ तक भेजने का काम किया गया। संघ की प्रांत टोली, विभाग कार्यवाह, प्रचारक जिलों के समन्वयक, विधानसभा के समन्वयकों से सीधा संवाद किया गया। इस पूरे आयोजन में भाजपा के प्रभारी, राष्ट्रीय संगठन मंत्री गवाह रहे। इस पूरी कवायद का नतीजा यह निकला कि भारतीय जनता पार्टी ने पूर्ण बहुमत के साथ दोबारा यूपी में सरकार बनाने का इतिहास रच दिया। योगी ने दोबारा सत्ता संभाली और संघ वापस अपने काम की तरफ लौट गया।

परंतु दो साल बाद लोकसभा चुनाव 2024 में परिस्थितियां एकदम बदल गईं। जनवरी में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा से भाजपा आत्मविश्वास के लबरेज दिखाई दी। मोदी का चेहरा और राम मंदिर का श्रेय के साथ पन्ना प्रमुख तक फैल चुका पार्टी का संगठन देख पार्टी के नेता ये मानकर चल चुके थे कहीं कोई दिक्क्त नहीं है। बता दें हर लोकसभा चुनाव से पहले आरएसएस के कार्यकर्ता हर लोकसभा क्षेत्र दर्जनों बैठकें कर लेते हैं। जनता क्या सोच रही है, प्रत्याशियों के बारे में उनका क्या ख्याल है, सांसद कितना प्रभावी है, मुददे कौन कौन से हैं, सत्ता विरोधी लहर कितनी है आदि का पूरा फीडबैक संघ के पास होता है। ये किसी भी राजनीतिक दल से ज्यादा सटीक माना जाता है। संघ से समय-समय पर फीडबैक भी तमाम माध्यमों से बीजेपी नेताओं को दिया जाता रहा है। इस बार भी परिस्थितियां प्रतिकूल होने का फीडबैक था लेकिन बीजेपी नेताओं ने इस पर गौर ही नहीं किया। परिणाम यह निकला की बीजेपी यूपी और दिल्ली दोनों जगह कमजोर हो गई।

अपने सांसदों की जुबानी जंग पर अखिलेश यादव क्यों चुप ?

अजय कुमार

रामपुर में आजम खां का मजबूत सियासी दुर्ग रहा है। वह खुद तो लंबे अरसे तक विधायक और सांसद रहे, अपने बेटे और करीबियों को भी उन्होंने लखनऊ के सदन तक पहुंचाया है। पत्नी को भी राज्यसभा सदस्य बनवाया।

राजनैतिक दलों के भीतर हार के बाद हाहाकार होते तो कई बार देखा गया है, लेकिन रिकार्ड जीत के पश्चात भी पार्टी की टॉप लीडरशिप के बीच हंगामा खड़ा हो जाये तो उस पर लोग चटकारे तो लेते ही हैं। बात समाजवादी पार्टी के जेल में बंद दिग्गज नेता आजम खान और रामपुर के नये नवेले सांसद के बीच टकराव की हो रही है, जिसमें अखिलेश की खामोशी बड़ा फैक्टर नजर आ रहा है। कहने को, यह दो दिग्गजों का अपना मत हो सकता है, लेकिन राजनीतिक गलियारों में इसे सपा में चल रही गुटबाजी के चलते वर्चस्व का कारण माना जा रहा है, जिसके भविष्य में और भी तूल पकड़ने की संभावना है।दरअसल, लोकसभा चुनाव के परिणाम को आए अभी हफ्ता भर हुआ है और सपा के दो सांसदों में पार्टी महासचिव आजम खां को लेकर जुबानी जंग छिड़ गई है। यह बात पार्टी फोरम में होती, तो ठीक थी। बयानबाजी सार्वजनिक रूप से की गई है। रामपुर के नवनिर्वाचित सांसद मोहिबुल्लाह नदवी ने आजम खान को सुधार गृह में बताते हुए दुआ की जरूरत बताई। जबकि मुरादाबाद की सांसद रुचि वीरा ने आजम से मिलने जाने की बात कहते हुए मोहिबुल्लाह को ही अपरिपक्व बता दिया। वैसे यह झगड़ा चुनाव के दौरान भी दबी जुबान से समाजवादी नेताओं के बीच चर्चा का विषय रहा था।

दरअसल, रामपुर में आजम खां का मजबूत सियासी दुर्ग रहा है। वह खुद तो लंबे अरसे तक विधायक और सांसद रहे, अपने बेटे और करीबियों को भी उन्होंने लखनऊ के सदन तक पहुंचाया है। पत्नी को भी राज्यसभा सदस्य बनवाया। रामपुर में सपा का मतलब आजम ही माने जाते रहे हैं, लेकिन इस बार रामपुर में अखिलेश ने आजम की इच्छा के विरूद्ध नदवी को टिकट दिया था। ऐसा इसलिये हो पाया था क्योंकि 2019 के बाद से आजम खान पर ताबड़तोड़ मुकदमे दर्ज होने के बाद उनके दुर्ग में कई नेता सेंधमारी में लगे हुए हैं। स्थिति यह हुई कि इस लोकसभा चुनाव में उनकी मंशा के विपरीत सपा के शीर्ष नेतृत्व ने मोहिबुल्लाह को सपा प्रत्याशी बनाया और आजम खेमे के विरोध के बाद भी उन्हें रिकॉर्ड मतों से जिता लिया गया।

बताते चलें अबकी से नवाब खानदान और आजम परिवार इस चुनाव से सीधे नहीं जुड़े थे, इसलिए पहले से ही माना जा रहा था कि जीतने वाला रामपुर की राजनीति को धार देने वाला नया धुरंधर होगा। मोहिबुल्लाह नदवी के आजम को सुधार गृह में बताना इसी दिशा में एक कदम माना जा रहा है। नदवी की आजम के खिलाफ इतनी घटिया बयानबाजी करने की हिम्मत इस लिये बढ़ी क्योंकि वह आजम की मर्जी के बिना चुनाव जीतने में सफल रहे थे। आजम खेमे के विरोध के बाद भी उन्होंने रामपुर में जीत हासिल की। जिस रामपुर के मुस्लिम मतदाता कभी आजम खां के साथ रहते थे, आज वह मोहिबुल्लाह के साथ हैं। ऐसे में माना जा रहा है कि अपना वर्चस्व कायम रखने के लिए अपनी अलग पहचान के लिए यह बयान उनकी रणनीति का हिस्सा है, क्योंकि सपा के जिलाध्यक्ष, प्रदेश के दो सचिव और विधायक भी आजम खां के इशारे पर ही पार्टी के विरोध में आ गए थे और चुनाव बहिष्कार करने तक की घोषणा कर दी थी।

उधर, मुरादाबाद की नई नवेली सांसद रुचि वीरा ने रामपुर के निर्वाचित सांसद को अपरिपक्व बताकर जाहिर कर दिया कि वह आजम खां के साथ खड़ी हैं। रूचि वीरा को बेहद नाटकीय ढंग से मुरादाबाद के उस समय के सांसद का ऐन मौके पर टिकट काट कर मैदान में उतारा गया था। उन्हें यह टिकट आजम खां की पैरवी से ही टिकट मिला था। पार्टी में मजबूत पकड़ बनाए रखने के लिए उन्हें इस सहारे की जरूरत भी है, लेकिन मुरादाबाद की राजनीति में इसके साइड इफेक्ट हो सकते हैं, क्योंकि निवर्तमान सांसद डा. एसटी हसन अपना टिकट कटने की वजह आजम खां को ही मानते हैं। उन्होंने चुनाव में रुचि वीरा का विरोध तो नहीं किया, लेकिन समर्थन भी नहीं दिया। वह पूरे प्रचार के दौरान घर पर ही बैठे रहे। इसके अलावा मुरादाबाद और आसपास के जिलों में सक्रिय पार्टी के मुस्लिम नेताओं की एक लॉबी अंदरखाने आजम के बजाए पार्टी में अपना वर्चस्व चाहती है। उसने एसटी हसन को टिकट दिलाने को एड़ी से चोटी का जोर भी लगाया था। ऐसे में यह लॉबी रुचि वीरा की राह में आगे चलकर रोड़ा पैदा कर सकती है।

होंडा लाई दुनिया की पहली एयरबैग वाली बाइक, कीमत इतनी की आ जाएगी 4 हुंडई क्रेटा

परिवहन विशेष न्यूज

Honda Goldwing 2024 होंडा कंपनी ने दुनिया की पहली एयरबैग वाली बाइक का इंतजार खत्म कर दिया है। कंपनी ने अपनी होंडा गोल्डविंग (Honda Goldwing) में एयरबैग का फीचर दिया है जो एक्सीडेंट के वक्त किसी कार के एयरबैग की तरह खुल जाते हैं। इसमें एंड्रॉइड और एपल कारप्ले सपोर्ट मिलता है। आइए जानते हैं इस मोटरसाइकिल के फीचर और स्पेसिफिकेशन के बारे में।

नई दिल्ली। चार पहिया गाड़ियां चलाने वालों के लिए जितनी सेफ्टी उनके लिए अहम है उतनी ही बाइक चलाने वालों के लिए भी होती है। वहीं, कारों के मुकाबले मोटरसाइकलों में सेफ्टी की ज्यादा जरूरत होती है। जिसे देखते हुए होंडा एक ऐसी बाइक लेकर आई है, जो कार की तरह की एयरबैग का फीचर देती है। इस बाइक का नाम Honda Goldwing 2024 है। आइये जानते हैं कि इस बाइक में एयरबैग के अलावा और क्या खास है।

इसमें 21.1 लीटर का फ्यूल टैंक

Honda Goldwing में 1833cc, लिक्विड कूल्ड 4 स्ट्रोक 24 वॉल्व SOHC फ्लैट-6 इंजन लगाया गया है। इस इंजन से मैक्सिमम 93kW/5500rpm का पावर और मैक्सिमम 170Nm/4500rpm का टॉर्क जनरेट होता है। होंडा ने अपनी इस बाइक में 21.1 लीटर का फ्यूल टैंक दिया है। ये बाइक 124.7 bhp की मैक्सिमम पावर जनरेट करती है। जिसकी वजह से आप इसे किसी भी तरह के रास्ते पर चलाते हैं तो भी शानदार पिकअप देती है।

Honda Goldwing के फीचर्स

होंडा गोल्डविंग के फीचर्स की बात करें तो इसमें 7-इंच का कलर TFT डिस्प्ले लगाया गया है। इसके साथ ही इसमें लेक्ट्रिक विंडशील्ड, ब्लूटूथ कनेक्टिविटी, गोल्डविंग टूर में फुल-LED लाइटिंग सिस्टम मिलता है। बाइक में एंड्रॉइड ऑटो और एपल कारप्ले सपोर्ट दिया गया है। वहीं, इसमें 4 स्पीकर, टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम, एक एयरबैग और 2 USB टाइप-C पोर्ट मिलते हैं।

इसका फ्यूल टैंक सीट के नीचे दिया गया है। इसमें 3 अलग-अलग स्टोरेज बॉक्स, पीछे बैठने वाले पैसेंजर के लिए कैप्टन सीट दिया गया है। इसमें जो एयरबैग दिया गया है वो टक्कर के वक्त खुल जाएगा। ऐसे में राइडर बाइक से हटकर सामने किसी से भी टकराने से बच जाएगा।

इतनी है कीमत

Honda Goldwing की शुरुआती एक्स-शोरुम कीमत 44.51 लाख रुपये है। यह बाइक टोयोटा फॉर्च्यूनर से भी महंगी है। टोयोटा फॉर्च्यूनर की शुरुआती कीमत 38.83 लाख रुपए है। इतना ही नहीं इतनी कीमत में चार Hyundai Creta आ जाएगी। जिसकी कीमत करीब 11 लाख रुपये है।

टाटा की Sierra EV साल 2026 में मारेगी एंट्री, मिल सकते हैं ये शानदार फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

Tata Sierra EV launch date कार निर्माता कंपनी टाटा ने Sierra EV की लॉन्च डेट का खुलासा कर दिया है। इस ईवी में एडास इलेक्ट्रिक सनरूफ डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले एम्बिएंट लाइटिंग जैसे फीचर्स मिल सकते हैं। वहीं पीछे बैठने वाले लोगों के लिए स्क्रीन भी दी जा सकती है। आइए विस्तार में जानते हैं कि Tata Sierra EV में और कौन से फीचर्स होंगे।

नई दिल्ली। भारतीय कार निर्माता कंपनी टाटा ने अपनी सिएरा SUV की लॉन्चिंग की घोषणा कर दी है। कंपनी इसे साल 2026 में लॉन्च करने जा रही है। कंपनी इस बार सिएरा पर नया दांव खेलने जा रही है। कंपनी इस बार सिएरा को इलेक्ट्रिक अवतार में पेश करेगी और यह 5 डोर SUV होगी। बता दें कि कंपनी ने इसे साल 2000 में लॉन्च किया था, जिसे लोगों ने खूब पसंद किया था। तब यह 3 दरवाजों के साथ ही आती थी।

कंपनी ने Sierra EV को पहली बार ऑटो एक्सपो 2020 में कॉन्सेप्ट फॉर्म के रूप में दिखाया था। इसके बाद इसे ऑटो एक्सपो 2023 में एक दूसरा कॉन्सेप्ट दिखाया गया, जिसमें 2020 के कॉन्सेप्ट की चार-दरवाजों के बजाय एक 5-डोर वाली बॉडी थी। आइए जानते हैं कि Tata Sierra EV किन फीचर्स से लैस रहने वाली है और 2026 में कब लॉन्च होगी।

Tata Sierra EV में मिलेंगे ये फीचर्स

Tata Sierra EV में रियर सीट को हटाकर सीट बढ़ाने का ऑप्शन मिल सकता है। यह कार एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम और हिल होल्ड असिस्ट के साथ आ सकती है। इसके साथ ही इसमें टच स्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, पुश स्टार्ट और स्टॉप बटन, क्रूज कंट्रोल, फ्रंट में चार्जिंग प्वाइंट और मस्कुलर लुक्स होगी। इनके अलावा ड्राइवर केबिन और पीछे दोनों जगह एयरबैग लगाए जाएंगे।

एक बार चार्ज करने पर इतनी चलेगी

अभी तक मिली जानकारी के मुताबिक, Tata Sierra EV की लंबाई 4150 mm, चौड़ाई 1,820 mm और हाइट 1675 mm होगी। कार में 2450 mm का लंबा व्हीलबेस देखने को मिलेगा। इस कार को एक बार चार्ज करने के बाद 500 किमी तक चलाया जा सकेगा। यह कार नई लाइफस्टाइल एसयूवी नई पंच ईवी वाले नए Acti lev प्लेटफॉर्म पर बेस्ड हो सकती है। सिएरा ईवी में 90 के दशक के समय आने वाली सिएरा की झलक मिल सकती है।

इतनी हो सकती है कीमत

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, Tata Sierra EV मार्च 2026 तक लॉन्च की जाएगी। इसमें पांच और सात सीट ऑप्शन मिल सकते हैं। अनुमान यह भी लगाया जा रहा है कि इस कार की शुरुआती कीमत 25 से 30 लाख रुपये हो सकती है।

सुजुकी बंद करेगी थाइलैंड में अपनी फैक्ट्री, जानें भारत को क्या होगा फायदा

Suzuki Shut Thailand factory in 2025 सुजुकी मोटर कॉरपोरेशन अपनी थाईलैंड वाले प्लांट को बंद करने जा रही है। कंपनी की तरफ से यह सुनिश्चिक किया गया है कि थाईलैंड में उनकी गाड़ियों के उत्पादन को बंद करने के बाद भी उनका आयात करती रहेगी। आइए जानते हैं कि सुजुकी मोटर की थाईलैंड वाले प्लांट को बंद करने के पीछे की वजह क्या है।

नई दिल्ली। सुजुकी मोटर कॉरपोरेशन अपनी थाईलैंड वाले प्लांट को बंद करने की घोषणा कर दी है। कंपनी ने यह निर्णय वैश्विक स्तर पर कार्बन तटस्थता और इलेक्ट्रिफिकेशन को बढ़ावा देने के लिए लिया है। हालांकि प्लांट को बंद करने की प्रक्रिया विदेश में हो रही है। सुजुकी के लिए भारत एक प्रमुख बाजार है। आइए जानते हैं कि सुजुकी के इस फैसले का भारत पर क्या असर पड़ेगा।

इस कारण से बंद हो रही थाईलैंड प्लांट

सुजुकी मोटर की तरप से लिए गए इस फैसले के पीछे का कारण थाईलैंड के बाजार में उनकी कारों की बिक्री में गिरावट है। इसके साथ ही कंपनी द्वारा कार्बन तटस्थता और इलेक्ट्रिफिकेशन की दिशा में वैश्विक प्रयास भी है। जिस प्लांट को सुजुकी बंद करने जा रहे है वहां पर कभी सालाना 60,000 यूनिट का उत्पादन होता था। वहां पर वित्तीय वर्ष 2023-24 में 10,807 यूनिट की घरेलू बिक्री में गिरावट हुई और केवल 1,272 यूनिट का ही निर्यात किया गया।

इससे भारत को क्या होगा फायदा

थाईलैंड के प्लांट के बंद होने के बाद वहां पर बनाई जाने वाली स्विफ्ट, सेलेरियो और सियाज जैसे लोकप्रिय मॉडल का उत्पादन अब भारत में होगा। इन कारों की थाईलैंड में पूर्ति भारत से निर्यात करके किया जाएगा। ऐसा होने से न केवल सुजुकी के लिए वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में भारत की स्थिति मजबूत होगी, बल्कि मूल्यवान विदेशी मुद्रा भी बढ़ेगी। साथ ही भारत थाई बाजार के लिए वाहनों की आपूर्ति करने के लिए एक मजबूत दावेदार के रूप में उभरेगा। जिससे घरेलू उत्पादन को बढ़ावा मिल सकता है।

प्लांट बंद के बाद भी जारी रहेंगी ये चीजें

सुजुकी मोटर की तरफ से यह पुष्टि की गई है कि थाईलैंड में कारों के उत्पादन को बंद करने के बाद भी बिक्री का संचालन जारी रहेगा। इसकी गाड़ियां थाईलैंड भारत और जापान सहित अन्य आसियान क्षेत्रों से सीबीयू रास्ते के जरिए आयात की जाएंगी। इसके साथ ही कार्बन तटस्थता को बढ़ावा देने के लिए थाईलैंड सरकार के लक्ष्यों के अनुरूप, सुजुकी आगे चलकर इलेक्ट्रिफिकेशन और हाइब्रिड मॉडल पेश करेगी।

ऐप्पल ने लॉन्च किया नया कारप्ले, इन गाड़ियों में होगी नए सिस्टम की शुरुआत

Apple New-gen CarPlay Apple ने नए जेनेरेशन का CarPlay लॉन्च किया है। जो कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आता है। इसमें आपको क्लाइमेट सेटिंग्स ड्राइविंग मोड और ड्राइवर असिस्ट सेटिंग्स जैसे फीचर्स मिलेंग। भारत में Apple CarPlay सिस्टम अगले साल आने वाली कारों में देखने को मिलेगा। आइए विस्तार में जानते है new-gen Apple CarPlay के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन के बारे में।

नई दिल्ली। दिग्गज टेक कंपनी ऐपल गाड़यों में मिलने वाले कारप्ले फीचर के और भी बेहतर बना दिया है। कंपनी ने Apple new-gen CarPlay को लॉन्च कर दिया है, जो स्मार्टफोन मिररिंग इंटरफेस के साथ आया है। यह नया CarPlay सिस्टम कार के इंफोटेनमेंट डिस्प्ले से लेकर इंस्ट्रूमेंट पैनल सहित सभी स्क्रीन में काम करेगा। आइए जानते हैं कि नए Apple CarPlay में क्या-क्या नए फीचर्स मिलेंगे।

इसमें Apple ने इसे हाल ही में 2024 वर्ल्डवाइड डेवलपर्स कॉन्फ्रेंस (WWDC) लॉन्च किया है। इसमें कई कस्टमाइज़ेशन ऑप्शन भी मिलेंगे। नए Apple CarPlay में रिवर्सिंग कैमरा और इनक्लिनोमीटर, और ऑफ-रोड और परफॉरमेंस गेज जैसे फीचर्स भी दिए गए हैं। नए Apple CarPlay को अपडेट iOS 18 के रोल आउट के साथ पेश किया जाएगा। इसमें आपको क्लाइमेट सेटिंग्स, ड्राइविंग मोड और ड्राइवर असिस्ट सेटिंग्स सहित ऑन-बोर्ड फंक्शन के फीचर्स भी मिलेंगे।

इन कारों में मिलेगा नया Apple CarPlay

हाल में नया Apple CarPlay, Porsche और Aston Martin के कारों में देखने को मिलेगा। इन दोनों कंपनियों ने सबसे पहले अपनी कारों में इसे लागू करने पर सहमति जताई है। जिसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस साल इन दोनों ब्रांड के लिए लॉन्च होने वाले नए मॉडल नए Apple CarPlay देखने को मिल सकता है। वहीं भारत की बात करें तो यह अगले साल से लॉन्च होने वाली नई कारों में देखने को मिल सकते हैं। अपडेटेड कारप्ले की स्केलेबल और मॉड्यूलर प्रकृति सभी तरह के स्क्रीन को सपोर्ट करेगी। इसके साथ ही ऐपल कारप्ले केवल वायरलेस कनेक्शन के जरिए से ही काम करेगा।

बाइक के लिए नया Apple CarPlay

बहुत सी ऐसी बाइक है जो आधुनिक और प्रीमियम बाइक अब डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर के साथ आती है। Apple उन राइडर्स के इस सेगमेंट के लिए टारगेट करना चाहता है, जो इसे अपनी बाइक में चाहते हैं। दोपहिया वाहनों में नया Apple CarPlay आने के बाद उन्हें इसके ABS, ट्रैक्शन कंट्रोल और नेविगेशन, म्यूजिक और कॉल कंट्रोल जैसे फीचर्स मिलेंगी।

कनक, कनक ते सौ गुनी

सिद्धगुरु प्रमोद जी

रीतिसिद्ध काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि बिहारी का प्रसिद्ध दोहा 'कनक, कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय। वा खाये बौराय जग, या पाये बौराय।' आज इक्कीसवीं शताब्दी में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना प्रासंगिक यह सत्रहवीं शताब्दी में था, जब इसे लिखा गया था।

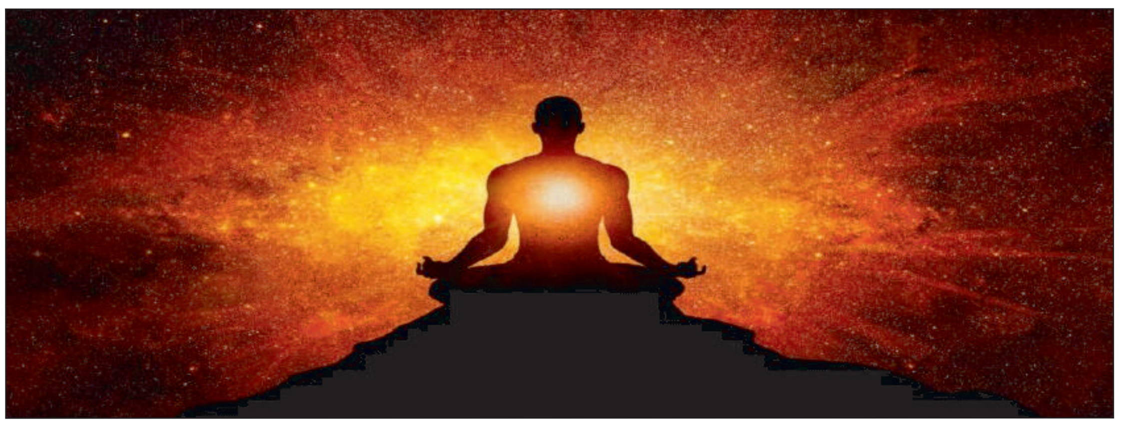

आध्यात्मिकता के साथ विनम्रता ऐसे ही सहज चली आती है, जैसे फूलों के साथ सुगंध और सूर्य के साथ प्रकाश। जिस प्रकार बिना मेघों के बरसात नहीं हो सकती, उसी प्रकार सद्गुणों के अभाव में आध्यात्मिकता महज एक छलावा है। थोड़ा और गहराई में जाएं तो सवाल उठता है कि उदारता क्या है, संवेदनशीलता क्या है, आध्यात्मिकता क्या है? आइए, इसे समग्रता में समझने की कोशिश करते हैं। आध्यात्मिकता का मतलब है कि हमारा मन ही मंदिर हो जाए। जब हम इतने प्रेममय हो जाएं कि किसी भिखमंगे को वह बासी खाना न दें जो हम खुद नहीं खाना चाहते। जब हम बीमारी के कारण छुट्टी मार रहे अपने नौकर का वेतन न काटें, जब हम सडक़ किनारे बैठे मोची से, गली में सब्जी बेचने आए ठेले वाले से, रिक्शा वाले से मोलभाव में अड़ ही न जाएं तो हम प्रेममय हैं, हम खुद प्रेम हैं, और आध्यात्मिक हैं'

रीतिसिद्ध काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि बिहारी का प्रसिद्ध दोहा 'कनक, कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय। वा खाये बौराय जग, या पाये बौराय।' आज इक्कीसवीं शताब्दी में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना प्रासंगिक यह सत्रहवीं शताब्दी में था, जब इसे लिखा गया था। इस दोहे का भावार्थ यह है कि सोना, धतूरे से भी कहीं ज्यादा नशा देता है, क्योंकि धतूरा खाने के बाद ही किसी को नशा होता है, लेकिन घर में सोना आ जाए, धन-संपत्ति आ जाए, तो आदमी को यूं ही नशा हो जाता है, उसका दिमाग चढ़ जाता है, उसे इतना घमंड हो जाता है कि वह बाकी सबको कीड़े-मकोड़े जैसा समझने लगता है और जिस किसी का अपमान कर डालता है। इस संदर्भ में एक बहुत प्रसिद्ध प्रयोग का जिक्र सचमुच समीचीन होगा। अमेरिका के एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय ने बड़ी संख्या में लोगों को पुरानी मित्सुबिशी कारें दीं, जिन पर जगह-जगह डेंट पड़े हुए थे, पेंट उखड़ा हुआ था और उन्हें एक नियत रूट पर गाड़ी चलाने की हिदायत दी। आपको मालूम ही होगा कि पश्चिमी देशों में यह प्रावधान है कि जेबरा क्रॉसिंग पर पैदल चल रहे लोगों को पहले सडक़ पार करने दी जाती है। पुरानी मित्सुबिशी कारें चला रहे इन सभी लोगों ने ट्रैफिक नियमों का पालन करते हुए पैदल चल रहे लोगों के लिए नियमानुसार गाड़ी रोक कर उन्हें सडक़ पार करने दी। कुछ समय के बाद इन्हीं लोगों को दोबारा उसी रूट पर कार चलाने के लिए कहा गया, परंतु इस बार चलाने के लिए उन्हें चमचमाती हुई नई-नकोर बीएमडब्ल्यू कारें दी गईं। वही शहर, वही रूट, वही ड्राइवर, और बदलाव सिर्फ कारों का था। इस बार उनके हाथ में नई, महंगी लग्जरी बीएमडब्ल्यू कारें थीं। परिणाम चौंकाने वाले थे।

इस बार चालीस प्रतिशत ड्राइवरों ने पैदल चल रहे लोगों को राह नहीं दी और ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करते हुए अपनी गाड़ी जेबरा क्रॉसिंग से पहले पार कर ली। कार नई थी, लग्जरी कार थी, बीएमडब्ल्यू थी, महंगी थी, स्टेटस सिंबल वाली कार थी, तो ड्राइवरों को कार का घमंड हो गया और घमंड की उस रौ में उन्होंने ट्रैफिक नियमों की परवाह न करते हुए पैदल चल रहे लोगों को महत्वहीन मानते हुए पहले सडक़ पार करने की सुविधा देने की आवश्यकता नहीं समझी। उल्लेखनीय है कि ऐसा तब हुआ जब वे सिर्फ लग्जरी कार ड्राइव कर रहे थे, कार उनकी नहीं थी, वे कार के मालिक नहीं थे, तब भी इतना घमंड! ट्रैफिक नियमों का पालन न करने वाले इन ड्राइवरों ने लॉर्ड एक्टन के नाम से प्रसिद्ध इंगलिश कैथोलिक इतिहासकार, राजनीतिज्ञ एवं लेखक जॉन एमरिक एडवर्ड डलबर्ग एक्टन के कथन 'पावर करप्ट्स एंड एब्सौल्यूट पावर करप्ट्स एब्सौल्यूटली' यानी, शक्ति व्यक्ति को भ्रष्ट बना देती है और असीमित शक्ति व्यक्ति को असीमित तौर पर भ्रष्ट बना देती है। ताकत के अहंकार में डूबा व्यक्ति सही और गलत का विवेक छोड़ देता है और अनचाहे काम करने लग जाता है। ताकत के कई रूप हैं। किसी के पास धन है, किसी के पास पद है, किसी के पास सत्ता है, किसी के पास ज्ञान है, किसी के पास कोई हुनर है, किसी का खानदान ऊंचा है, किसी का रंग गोरा है। कोई भी ऐसा कारण जो हमें दूसरों से अलग होने का, ऊंचा होने का एहसास दिलाता है, हमारे अहंकार का कारण बन सकता है, और तब भी जब मालूम हो कि ऊंचेपन का एहसास देने वाली ये चीजें अस्थायी हैं। आज हम समाज में जो विद्रुप देख रहे हैं, भ्रष्टाचार देख रहे हैं, अन्याय देख रहे हैं, उत्पीडऩ देख रहे हैं, उसके मूल में अहंकार ही है। बड़े होने का अहंकार, श्रेष्ठ होने का अहंकार, ज्ञानी होने का अहंकार हमारी मति मार देता है और हम पगला जाते हैं। इस अहंकार से बचने का एक ही तरीका है कि हम कृतज्ञ मन से जीवन की खुशियों को स्वीकार करें। पता नहीं किसने कब-कब हमारी सहायता की।

कोई कर पाया या नहीं कर पाया, पर पता नहीं किसने कब-कब हमारी सहायता करने की कोशिश की। कोई कर पाया या नहीं कर पाया, पर पता नहीं कब-कब किसने हमारी सहायता करने का विचार किया। हम जो कुछ भी आज हैं, पता नहीं किस-किस के प्रयत्नों का फल हैं। यह ज्ञान ही कृतज्ञता के लिए काफी है। यह भान हो जाए तो इस भान का होना ही सबके लिए प्रेम का कारण बन जाता है। यह निःस्वार्थ प्रेम, विस्तारित प्रेम, हर जाने-अनजाने के लिए प्रेम हमें आध्यात्मिकता की राह पर ले चलता है। जीवन के हर पल में हम जीवन के प्रति कृतज्ञ हों तो ही हम आध्यात्मिक हैं। जीवन में अगर आध्यात्मिकता होगी तो व्यक्ति दूसरों के प्रति खुद-ब-खुद ज्यादा संवेदनशील हो जाएगा, हमारा दृष्टिकोण ज्यादा मानवीय हो जाएगा। मानवता की पाठशाला का नाम ही आध्यात्मिकता है। आध्यात्मिकता से ही जीवन में सत्य, प्रेम, करुणा, उदारता, आत्मीयता, सहजता, सहनशीलता एवं विनम्रता जैसे दैवीय गुण प्रकट होते हैं। आध्यात्मिकता मानव जीवन को मैं और मेरे से ऊपर उठकर सबके लिए जीने की प्रेरणा प्रदान करती है। जब आध्यात्मिकता किसी व्यक्ति के जीवन में आती है तो वह अपने साथ विनम्रता जैसे अनेक सद्गुणों को भी ले आती है।

आध्यात्मिकता के साथ विनम्रता ऐसे ही सहज चली आती है, जैसे फूलों के साथ सुगंध और सूर्य के साथ प्रकाश। जिस प्रकार बिना मेघों के बरसात नहीं हो सकती, उसी प्रकार सद्गुणों के अभाव में आध्यात्मिकता महज एक छलावा है। थोड़ा और गहराई में जाएं तो सवाल उठता है कि उदारता क्या है, संवेदनशीलता क्या है, आध्यात्मिकता क्या है? आइए, इसे समग्रता में समझने की कोशिश करते हैं। आध्यात्मिकता का मतलब है कि हमारा मन ही मंदिर हो जाए। जब हम इतने प्रेममय हो जाएं कि किसी भिखमंगे को वह बासी खाना न दें जो हम खुद नहीं खाना चाहते। जब हम बीमारी के कारण छुट्टी मार रहे अपने नौकर का वेतन न काटें, जब हम सडक़ किनारे बैठे मोची से, गली में सब्जी बेचने आए ठेले वाले से, रिक्शा वाले से मोलभाव में अड़ ही न जाएं तो हम प्रेममय हैं, हम खुद प्रेम हैं, और आध्यात्मिक हैं। सहज संन्यास मिशन में हम सब संन्यासी यही सीखते और सिखाते हैं कि आध्यात्मिक होने के लिए कर्मकांड हो या न हो, फर्क नहीं पड़ता। हम पूजा-अर्चना करें न करें, फर्क नहीं पड़ता, पर हम इस ब्रह्मांड की हर जड़-चेतन जीवन और वस्तु के प्रति प्रेममय हो जाएं, यह आवश्यक है। चेतन ही नहीं, जड़ वस्तुओं के प्रति भी प्रेम और कृतज्ञता का भाव ही आध्यात्मिकता है। ऐसा कर लेंगे तो अहंकार तिरोहित हो जाएगा, गायब हो जाएगा। अहंकार गया तो जीवन सुधर जाएगा। यही तो हमारा लक्ष्य है।

संपादक की कलम से

भागवत की नसीहत या चेतावनी

आरएसएस के सरसंघचालक मोहन भागवत ने जो टिप्पणियां की हैं, वे संघ-भाजपा के अलगाव या संबंध-विच्छेद तक की नौबत नहीं हैं। उन्होंने जिनके संदर्भ में 'सेवक', 'मर्यादा' और 'अहंकार' सरीखे शब्दों का इस्तेमाल किया है, वे प्रत्यक्ष रूप से भाजपा और प्रधानमंत्री मोदी से ही जुड़ते हों, सरसंघचालक की इतनी संकीर्ण सोच नहीं हो सकती। भाजपा और मोदी दोनों ही संघ के सृजन हैं। संघ-प्रमुख ने कार्यकर्ताओं के विकास वर्ग कार्यक्रम के समापन पर अभिभावकीय मुद्रा में संबोधित किया, तो वह पूरी राजनीतिक और सामाजिक संस्कृति को आगाह कर रहे थे। अहंकार छोड़ कर काम करना चाहिए और काम के बदले अहंकार नहीं करना चाहिए, वही 'सच्चा सेवक' होता है। चुनाव में एक पक्ष होता है, तो दूसरा वैचारिक प्रतिपक्ष होता है। वह दुश्मन नहीं होता, आपका सैद्धांतिक विरोधी है। देश की सत्ता और संसद के लिए भी दोनों पक्ष अनिवार्य हैं। इस बार लोकसभा चुनाव कड़वाहट भरा था। चुनाव युद्ध की तरह लड़ा गया। मर्यादा जरूरी है। चुनाव में जो कुछ हुआ, उस पर विचार करना होगा। देश ने विकास किया है, लेकिन चुनौतियों को भी न भूलें। सहमति से देश चलाने की परंपरा का स्मरण रखें। निश्चित है कि सरसंघचालक ने भाजपा को कुछ नसीहत दी है और चेताया भी है। उन्होंने मतदान के कुछ चरणों में बूथ और पन्ना-प्रमुख के चेहरों के गायब होने का मुद्दा भी उठाया। जो कार्यकर्ता घरों से भाजपा के समर्थक मतदाताओं को निकाल कर मतदान-केंद्रों तक ला सकते थे, आखिर वे कहां थे? सरसंघचालक ने प्रत्याशियों पर असहमति का सवाल भी उठाया कि ऐसे अवांछित चेहरों को चुनाव मैदान में क्यों उतारा गया? आरएसएस को लेकर भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने जो बयान दिया था अथवा सार्वजनिक तौर पर जो निहितार्थ ग्रहण किया गया था, वह भी आत्मघाती साबित हुआ।

उसी के बाद संघ के स्वयंसेवक और प्रचारक भाजपा के चुनाव-प्रचार से तटस्थ हुए थे। संघ-भाजपा की आपसी समन्वय बैठकें तक नहीं हो सकीं, नतीजतन दोनों में ही समन्वय और सामंजस्य के अभाव दिखे। मतदान के प्रतिशत कम होते रहे। सरसंघचालक ने पहले भी चेताया था कि अब हम सिर्फ प्रधानमंत्री मोदी की छवि और लोकप्रियता के सहारे ही चुनाव नहीं जीत सकते। इस बार ऐसा ही हुआ कि भाजपा 400 पार के नारे के 'बुलबुलों' में ही कैद रही। प्रधानमंत्री मोदी के व्यक्तित्व पर ही अति विश्वास किया जाता रहा, नतीजा सामने है। भाजपा 240 सीट ही जीत पाई, जबकि गुजरी लोकसभा में भाजपा के 303 सांसद जीत कर आए थे। यह नतीजा भी तभी सामने आया, जब अधिकांश क्षेत्रों में संघ के कुछ कार्यकर्ता काम करते रहे। यह हमारा आकलन है कि जिस दिन संघ पूरी तरह, घोषित तौर पर, खुद को भाजपा से अलग कर लेगा, उस स्थिति में भाजपा के लिए 150 लोकसभा सीटें जीतना भी मुश्किल हो सकता है। दरअसल संघ वैचारिक और सैद्धांतिक तौर पर प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा के खिलाफ नहीं है। भाजपा के 18 करोड़ से अधिक सदस्य हैं, जो संघ के अभियानों के ही प्रतिफल हैं। भाजपा आज भी आरएसएस का राजनीतिक मंच है। संघ मोदी सरकार के पतन या 'इंडिया' जैसे विपक्षी गठबंधन की संभावित सरकार के पक्ष में कभी सोच भी नहीं सकता। सरसंघचालक भागवत ने जलते, त्राहि-त्राहि करते मणिपुर का मुद्दा प्रसंगवश ही उठाया है और केंद्र सरकार को कत्तव्य-बोध कराया है। मणिपुर हिंसा में 220 से ज्यादा मौतें हो चुकी हैं।

1100 से ज्यादा लोग घायल हैं। हिंसक घटनाओं का आंकड़ा 5000 से ज्यादा है, जबकि 70,000 से अधिक लोग विस्थापित हो चुके हैं। भागवत का सवाल है कि इस स्थिति पर ध्यान कौन देगा? प्राथमिकता के स्तर पर विचार करना किसका दायित्व है? करीब 50,000 लोग राहत-शिविरों में जीने को विवश हैं। यह संघ-प्रमुख का अभिभावकीय संबोधन है कि जो अपने कत्तव्यों का पालन करते हुए मर्यादा की सीमा में रहता है। जो अपने काम पर गर्व करता है, फिर भी अनासक्त रहता है, जो अहंकार से रहित होता है, ऐसा व्यक्ति ही वास्तव में 'सेवक' कहलाने का हकदार है। भाजपा को कुछ अप्रत्याशित पराजय झेलनी पड़ी है, लिहाजा यह टिप्पणी है।

राय

नड्डा से मांगता है हिमाचल

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे जगत प्रकाश नड्डा के पास फिर से केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय लौट आया है। एक बड़ा विभाग जो जनता के करीब और स्वास्थ्य बीमा योजना के कारण अजीज भी है, फिर भी मोदी मंत्रिमंडल को अपने समीप पाने के लिए नड्डा का आरोहण याद दिलाता रहेगा कि केंद्र से संसाधनविहीन हिमाचल की झोली कितनी भरती है। एक तरह से वह हिमाचली आरजू बनकर उभरे हैं, भले ही राज्यसभा सदस्य के नाते उनसे गुजरात की भी आशाएं रहेंगी, लेकिन बतौर मंत्री उनके दायित्व से प्रदेश के सरोकार परिमार्जित होना चाहेंगे। बेशक बिलासपुर एम्स जैसा ड्रीम प्रोजेक्ट उनके राजनीतिक करियर का प्रतिष्ठित मंच रहा है और आइंदा भी इसके विस्तार में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की भुजाएं प्रयास करेंगी, लेकिन यहां केंद्र के पास बंधक हिमाचली अधिकारों, आशाओं और डबल इंजन सरकार के दौर का साम्राज्य चिन्हित होकर देख रहा है। इसमें दो राय नहीं कि बल्क ड्रग पार्क और मेडिकल डिवाइस पार्क जैसी परिकल्पनाओं में जयराम सरकार को मिली सफलता की एक बड़ी भूमिका जगत प्रकाश नड्डा की रही है। तब वह मंत्री नहीं सत्तारूढ़ दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे। राज्य से उनका नाता जयराम और उनकी सरकार को मजबूत करता रहा है, लेकिन अब वह मोदी सरकार में सरकार है। इसमें दो राय नहीं कि हमीरपुर संसदीय क्षेत्र इस समय अपने भाग्योदय में सबसे उत्तम स्थिति के ग्रह गोचर लिए हुए है। इस क्षेत्र से केंद्र में दो सांसद, एक मंत्री, राज्य के मुख्यमंत्री व उपमुख्यमंत्री संबंध रखते हैं यानी एक साथ केंद्र व राज्य की ऊर्जा अगर काम करे, तो कम से कम हमीरपुर संसदीय क्षेत्र तो अपनी योजनाओं-परियोजनाओं को बेहतर शक्ल दे सकता है।

जाहिर तौर पर इसी भूखंड पर हिमाचल की सियासत का सबसे बड़ा बंटवारा भी हो रहा है। अगर भाजपा पूरी शिद्दत से लोकसभा की जमीन ले गई, तो मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू और उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने उपचुनावों में विपक्ष का सियासी असला छीन लिया है। अब पुनः निर्दलीयों के कारण चुनाव बगावती है, तो हमीरपुर संसदीय क्षेत्र में राजनीति फिर से इतिहास लिखेगी। बहरहाल केंद्रीय मंत्री के तौर पर मोदी सरकार की गोदी में हिमाचल को आर्थिक सुकून चाहिए। हैं फाइलें बहुत सी तेरे ही दामन में, हम तो सिर्फ नसीब वापस मांगते हैं। जाहिर है केंद्रीय मंत्री का किरदार हिमाचल को मिल जाए तो आत्मनिर्भरता के प्रश्नों को कहीं तो संबोधन मिलेगा। पर्यटन के रास्ते और पानी के वास्ते केंद्र सरकार के हुक्म की रत्तीभर तामील भी हमें राहत दे सकती है। जब शांता कुमार ने नरसिम्हा राव सरकार से जल विद्युत उत्पादन के बदले मुफ्त बिजली की रॉयलटी हासिल की थी, तो केंद्र के हुक्म की तामील हुई थी। जब प्रेम कुमार धूमल अटल सरकार से औद्योगिक पैकेज लाए थे तो भी हुक्म की तामील हुई थी। बेशक नड्डा व अनुराग भी सौगातें लाए, मगर इनके दायरे में पूरे हिमाचल का हिसाब अभी पूरा नहीं हुआ है। यह दीगर है कि केंद्र से विभिन्न सडक़ परियोजनाओं को गति मिलती है तो नड्डा का ड्रीम प्रोजेक्ट शिमला-धर्मशाला फोरलेन परियोजना के सुर तान छेड़ेंगे। भानुपल्ली-बिलासपुर रेल के साथ अंब-अंदौरा से ज्वालामुखी या नादौन के सुर मिलें तो हिमाचल में निखार आएगा। स्मार्ट सिटी परियोजनाओं की किस्मत धर्मशाला-शिमला से आगे भी चमके, तो शहरी आर्थिकी में विस्तार आएगा। हमें सिख पर्यटन की केंद्रीय परियोजनाओं में पांवटा से ऊना तक व आगे विशेष योजना चाहिए तो चार धाम सडक़ परियोजना की तर्ज पर हिमाचल के धार्मिक स्थलों का भी एक सशक्त परिवहन सर्किट चाहिए। चाहिए तो कांगड़ा एयरपोर्ट का विस्तार और मंडी हवाई पट्टी का श्रृंगार भी, लेकिन तब नड्डा के कदम कुछ आगे बढ़ कर मंडी, कांगड़ा व शिमला में देखने होंगे।

समतावाद के पैरोकार

आदमी शाम के झुटपुटे को तो रात नहीं, तो रात का आगाज कह दें लेकिन चढ़ते सूरज की रौशनी को हम अंधेरे की आमद कैसे कह देते? नहीं कह सके न, अतः अब उनके उपहास का पात्र हो गए हैं या उनके द्वारा खिल्ली उड़ाने के सामान हो गए हैं। सबसे पहले उन्होंने कुर्सी सम्भालते ही हमें हमारे फटीचर दिनों की जगह अच्छे दिन लाकर देने का वायदा किया था। अब इस फटीचर और उपेक्षित जिंदगी का बोझ ढोते हुए हमें अपनी जिंदगी घसीटने की आदत हो गई है। वायदे की छोड़ो। जानते हैं काफी अवसादग्रस्त माहौल हमने रच दिया है। सीधा सादा यह भी तो कह सकते थे कि आधी रात तक बत्ती जला-जला किताबों में मगजपच्ची करके हासिल की हुई डिग्रियां हमारे किसी काम नहीं आईं। इनके बगैर भी बहुत से लोग बेकार घूम रहे थे, इन्हें हासिल करके उनकी श्रेणी में ही चले आए। भरपेट खाने को अन्न न पहले मिलता था, न अब मिलता है। फिर एक जून भोजन और दूसरे जून ठंडा पानी पीकर जीने वाले लोगों की गिनती गरीबी रेखा से नीचे जीने वाले लोगों में होती है। आंकड़े बताते हैं, देश निरंतर प्रगति कर रहा है। गरीबी रेखा से नीचे जीने वालों का आंकड़ा निरंतर कम होता जा रहा है। भूखों को गिना तो आंकड़ा पहले से कम निकला। बस फिर क्या था, अच्छे दिन जल्द लौट आने की घोषणा कर दी गई। घोषणा करने में जाता ही क्या है? किसी को मनरेगा दे, बरस में सौ दिन काम मिलने को नौकरी की रेल पेल दे, बेकारी का खात्मा कह दिया। भूख से हायतौबा मचाते लोगों को फ्री लंगर की कतार में खड़ा कर दिया।

कोहराम और बढ़ा, तो इस कतार की जिंदगी को लम्बा करने की घोषणा कर दी। दरिया दिल हैं इस बस्ती के लोग। ऐसे फ्री लंगर बांट-बांट कर वे भुखमरी खत्म करते हैं, और परिवार के एक व्यक्ति को रोजगार दे कहते हैं. लो जी बेकारी पर प्रहार हो गया। अब भला अच्छे दिन आने में देर ही कितनी है? लेकिन घोषणाएं तो घोषणाएं ही होती हैं। मनरेगा कार्ड फर्जीवाड़े के धुरंधरों ने हथिया लिया, और फ्री लंगर या रियायती दरों पर बंटने वाला अनाज लक्ष्य तक पहुंचा ही नहीं। पहुंचा तो बंटा नहीं, क्योंकि किसे देना है और किसे नहीं, इसी पर मतैक्य नहीं हो सका। लो राजनीति के चतुर सुजान तो गरीबी हटाओ के इन दावों से भरे अभियान की सफलता से प्रसन्न हो अपने नाती-पोत्रों के लिए गद्दियां सुरक्षित करने में लग गए। आखिर इस देश को सोने की चिडिया भी तो बनाना है और देश की सूखी धरा पर दूध और घी की नदियों को भी बहाना है। शार्टकट संस्कृति के मसीहा अपने सार्थक हो जाने के प्रमाण जुटा रहे हैं।

सोने की चिडिया चहचहाने तो लगीं, लेकिन उनके पिंजरे बहुमंजिली इमारतों के गलियारों में लग गए। धीरे-धीरे ये चिडियां धरा पर उतर आएंगी और आपके कानों में फुसफुसाएंगी, 'लो हम आपके लिए अच्छे दिन ले आईं।' लेकिन अच्छे कामों का आम जन तक आने में वक्त लगता है, क्योंकि सही वक्त आने का इंतजार कर लें। चिडियां तब तक ऊंची मंजिलों पर चहचहाती रहें तो आपको दिक्कत क्या है? अब दिक्कत न आपको समझ आती है और न उसे आप बता पाते हो, तो चोर गलियों के मसीहा आपका उपहास ही उड़ाएंगे न। खिल्ली उड़ाते हुए कहेंगे, 'अजी हमने पूरा देश कार्पोरेट कर दिया, और इन्हें कार्पोरेट संस्कृति की कुछ खबर ही नहीं। कहते हैं लोग भूख और गरीबी से तंग आकर आत्महत्या कर रहे हैं, अब इन्हें कैसे बताएं कि मरने वाले दुसाध्य रोगों का शिकार थे।' लो कर लो बात, धनाढ्यों की आमदन तो सौ प्रतिशत बढ़ गई और आप जितना खाते थे, उससे भी गए। चिंता नहीं। समाजवाद उसके बाद ही शुरू होता है।

सुरेश सेठ

विचार

कर्मचारियों के लिए सरल बने चुनावी प्रक्रिया

इसके साथ ही 55 साल की उम्र पार कर चुके कर्मचारियों को निश्चित रूप से चुनावी ड्यूटी से मुक्त रखा जाना चाहिए। जहां तक संभव हो सके कर्मचारियों को दूरदराज के निर्वाचन क्षेत्रों में भेजने के बजाय बगल वाले विधानसभा क्षेत्रों में ड्यूटी करने के लिए भेजा जाना चाहिए। कर्मचारियों के लिए रहने-खाने की व्यवस्था भी स्कूलों के बजाय निर्वाचन आयोग द्वारा ही अनिवार्य रूप से करवाई जानी चाहिए'

हिमाचल प्रदेश के चुनावी इतिहास में पिछले लोकसभा चुनावों में पहली बार चुनाव ड्यूटी में लगे 24 सरकारी कर्मचारियों को एक साथ सस्पेंड होने का दंश भोगना पड़ा था। इस बार भी लोकसभा चुनावों में अत्यधिक गर्मी की वजह से जहां कुछ चुनाव कर्मियों की मौतों की खबरें हैं तो वहीं कुछ कर्मचारियों को निलंबित भी किया गया है। भारतीय चुनाव आयोग द्वारा 18वीं लोकसभा के लिए जारी कार्यक्रम के अनुसार देश की 543 सीटों के लिए 19 अप्रैल से 1 जून, 2024 के बीच 7 चरणों में चुनाव सम्पन्न करवाने की घोषणा की गई थी। हिमाचल प्रदेश की चार लोकसभा सीटों के लिए आखिरी चरण यानी 01 जून को मतदान संपन्न हुआ। लोकसभा चुनाव में इस बार कुल 98.8 करोड़ मतदाताओं में से 64 करोड़ 20 लाख से ज्यादा मतदाताओं ने वोट डाले, जिसे चुनाव आयोग ने एक बड़ी उपलब्धि बताते हुए कहा कि हमने एक विश्व रिकॉर्ड बनाया है। कुल 10.5 लाख ईवीएम मशीनों का प्रयोग किया गया। मशीनों पर प्रत्याशियों के चुनाव चिन्ह और नाम के साथ साथ उनके फोटो भी लगाए गए थे ताकि मतदाता अपनी पसंद के उम्मीदवार को आसानी से पहचान कर वोट डाल सकें। चुनाव आयोग द्वारा पहली बार सोशल मीडिया के जरिए चुनाव प्रचार को भी आचार संहिता के दायरे में लाया गया था। भारत में इतने लंबे समय तक चुनाव चलने की वजह से सभी विकास कार्य प्रभावित हुए हैं।

लगभग पौने 3 महीने तक लागू रही आचार संहिता की वजह से बहुत सारे विकास कार्य ठप होकर रह गए और राष्ट्र को अप्रत्यक्ष हानि उठानी पड़ी। दूसरे भारी गर्मी में चल रही चुनावी प्रक्रिया में चुनावी ड्यूटी पर लगे कुछ कर्मचारियों की जानें भी गई हैं। इस वजह से मांग उठी है कि जब देश में तापमान लगभग 45 डिग्री से ऊपर चल रहा हो, तब चुनाव पहले करवा लिए जाने चाहिए थे। शायद इसी वजह से मतदान प्रतिशत भी कम रहा। मतदान केंद्र ऐसे स्कूल या पंचायत भवनों में बनाए गए थे, जहां पंखे तक नहीं थे। पोलिंग पार्टियों को वहां पहले से पहुंचकर लंबी ड्यूटी करनी पड़ी। हिमाचल में सबसे आखिरी चरण में मतदान हुआ, लिहाजा सभी प्रत्याशियों को अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में प्रचार करने के लिए पर्याप्त समय मिला। हिमाचल प्रदेश में 2024 के लिए हुए लोकसभा चुनाव में प्रदेश के चार संसदीय क्षेत्रों में मत प्रतिशतता लगभग 71 प्रतिशत रही। इसी बीच चुनाव आयोग द्वारा हिमाचल प्रदेश के तीन निर्दलीय विधायकों के इस्तीफे से रिक्त हुई तीन विधानसभा सीटों क्रमशः देहरा, नालागढ़ और हमीरपुर के लिए उपचुनावों की अधिसूचना जारी कर दी गई है, जिसके लिए 10 जुलाई को मतदान होगा और 13 जुलाई 2024 को मतगणना के बाद नतीजे घोषित किए जाएंगे।

हिमाचल प्रदेश में चुनाव शांतिपूर्वक संपन्न हुए, लेकिन चुनावों को लेकर व्यवस्था संबंधी कुछ मुद्दों पर निर्वाचन आयोग को गौर फरमाने की आवश्यकता है। जहां तक चुनावी ड्यूटी में लगे कुछ कर्मचारियों के सस्पेंड किए जाने का सवाल है, तो इसमें कोई दो राय नहीं कि मतदान से पूर्व तैनात सभी कर्मचारियों को रिहर्सल द्वारा सभी विधानसभा क्षेत्रों में तैयारी करवाई जाती है। अज्ञानतावश, जल्दीबाजी अथवा डर के चलते कहीं न कहीं चुनावी प्रक्रिया में मानवीय चूक होने से इंकार भी नहीं किया जा सकता है। ऐसी भी सूचनाएं हैं कि कई मतदान केंद्रों में तैनात पीठासीन अधिकारियों ने अपनी टीम पर भरोसा ही नहीं किया। चुनाव आयोग द्वारा मतदान प्रक्रिया में हुई त्रुटियों का संज्ञान लेते हुए कुछ कर्मचारियों को सस्पेंड किया गया है। लोगों का ऐसा मानना है कि कोई भी कर्मचारी जानबूझकर गलती नहीं करता, लेकिन एकदम सस्पेंड होने का डर उसे भयाक्रांत करता है। आज के हालात में कोई भी कर्मचारी अपनी नौकरी से हाथ धोना नहीं चाहता और न ही सस्पेंड होने का कलंक अपने सिर पर ढोना चाहेगा। हिमाचल प्रदेश में चुनाव डयूटी का जिम्मा हजारों कर्मचारी उठाते आ रहे हैं और हर बार सफलतापूर्वक चुनावी प्रक्रिया को संपन्न करवाते हैं। प्रायः ऐसा भी देखने में आता है कि मतदान वाले दिन सुबह चार बजे से चुनावी ड्यूटी में लगे कर्मचारियों को मतदाताओं की लम्बी कतारों के चलते कई बार खाना खाने का समय भी नहीं मिलता है। हिमाचल प्रदेश एक पर्वतीय प्रदेश है, कई मतदान केंद्रों तक पैदल पहुंचना पड़ता है। कई जगहों पर रहने-खाने की व्यवस्था दुरुस्त नहीं होती है। चार-पांच दिनों तक मतदान प्रक्रिया को संपन्न करवाना किसी भी कर्मचारी के लिए किसी चुनौती से कम नहीं होता है। कई पोलिंग पार्टियों ने मतदान के बाद रात 2 और 3 बजे तक अपनी ईवीएम को जमा करवाया है।

उनकी मानसिक स्थिति को समझा जा सकता है। कई कर्मचारी रिटायरमेंट के नजदीक होते हैं, स्वास्थ्य संबंधी कई परेशानियां होती हैं, लिहाजा चुनाव आयोग को चाहिए कि कर्मचारियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रवैया अख्तियार करे और सस्पेंड हुए कर्मचारियों का पक्ष जल्दी सुनकर उन्हें शीघ्र बहाल किया जाए। इसके साथ ही 55 साल की उम्र पार कर चुके कर्मचारियों को निश्चित रूप से चुनावी ड्यूटी से मुक्त रखा जाना चाहिए। जहां तक संभव हो सके कर्मचारियों को दूरदराज के निर्वाचन क्षेत्रों में भेजने के बजाय बगल वाले विधानसभा क्षेत्रों में ड्यूटी करने के लिए भेजा जाना चाहिए। कर्मचारियों के लिए रहने-खाने की व्यवस्था भी स्कूलों के बजाय निर्वाचन आयोग द्वारा ही करवाई जानी चाहिए। कर्मचारियों को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए तुरंत उचित एवं सम्मानजनक पारिश्रमिक दिए जाने की भी व्यवस्था होनी चाहिए। सबसे बड़ी जरूरत कर्मचारियों के दिलो-दिमाग से चुनावी ड्यूटी के भय को समाप्त करने के उपायों को लागू करने की होनी चाहिए ताकि उनका मनोबल ऊंचा बना रहे। इस मसले का अनिवार्य रूप से समाधान होना चाहिए ताकि कर्मचारी राहत महसूस करें।

अनुज आचार्य

अब निवेश के लिए कर्ज की तलाश कर रहा है कारपोरेट क्षेत्रः एसबीआई

परिवहन विशेष न्यूज

एसबीआई के चेयरमैन दिनेश कुमार खारा ने कहा है कि कारपोरेट क्षेत्र से कर्ज की मांग बढ़ रही है और पांच लाख करोड़ रुपये का लोन प्रोसेस में है। उन्होंने कहा कि अब हम ऐसे चरण में आ गए हैं जहां उन्होंने (कारपोरेट) अपनी क्षमता बढ़ाने या कार्यशील पूंजी की जरूरत को पूरा करने के उद्देश्य से बैंकों से संपर्क करना शुरू कर दिया है।

नई दिल्ली। भारतीय स्टेट बैंक (SBI) के चेयरमैन दिनेश कुमार खारा ने कहा है कि कारपोरेट क्षेत्र से कर्ज की मांग बढ़ रही है और पांच लाख करोड़ रुपये का ऋण प्रक्रिया में हैं। खारा ने कहा कि जहां पिछले कुछ वर्षों के दौरान कंपनियों के बही-खाते में नकदी सरप्लस थी, लेकिन अब उन्होंने कार्यशील पूंजी (वर्किंग कैपिटल) जरूरतों और क्षमता विस्तार के लिए कर्ज की तलाश शुरू कर दी है।

उन्होंने कहा, "अब हम ऐसे चरण में आ गए हैं, जहां उन्होंने (कारपोरेट) अपनी क्षमता बढ़ाने या कार्यशील पूंजी की जरूरत को पूरा करने के उद्देश्य से बैंकों से संपर्क करना शुरू कर दिया है। बेशक, यह मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं। जब हम नहीं लिए गए मियादी ऋण प्रतिशत को देखते हैं, तो यह 25 से घटकर 18 प्रतिशत पर आ गया है।"

निजी क्षेत्र में मौजूद रहेंगे अवसर

दिनेश कुमार खारा ने कहा कि यह देखकर लगता है कि निजी क्षेत्र में अवसर मौजूद रहेंगे और एसबीआई इस क्षेत्र के लिए मूल्य सृजन करने की स्थिति में होगा। एसबीआई चेयरमैन ने कहा, "जब हम नए प्रस्तावों की पाइपलाइन को देखते हैं, तो यह काफी अच्छी है। यह लगभग पांच लाख करोड़ रुपये या उससे अधिक है।"

SBI कर सकता है 16 प्रतिशत की दर से वृद्धि

खुदरा कृषि और एमएसएमई (आरएएम) ऋण के संबंध में खारा ने कहा कि उच्च ब्याज दर के बावजूद एसबीआई इस वर्ष भी 16 प्रतिशत की दर से वृद्धि कर सकता है। बीते वित्त वर्ष में एसबीआई का आरएएम (रिटेल एग्रीकल्चर और एमएसएमई) 16 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 21 लाख करोड़ रुपये रहा है।

ट्रेन छूट जाने पर उसी टिकट पर दूसरी ट्रेन से कर सकते हैं सफर? क्या कहता है रेलवे का नियम

भारतीय रेलवे अपने यात्रियों की हर छोटी से छोटी परेशानी को ध्यान में रखते हुए एक समाधान पेश करता है। कभी आपकी ट्रेन छूट जाती है तो ऐसे में क्या आप दूसरी ट्रेन ले सकते हैं या नहीं यह सवाल जेहन में आ सकता है। ट्रेन छूट जाने पर टिकट के साथ दूसरी ट्रेन ली तो जा सकती है लेकिन इसे लेकर रेलवे की ओर से नियम बनाए गए हैं।

नई दिल्ली। भारत में ट्रेन से रोजाना लाखों लोग सफर करते हैं। ट्रेन का सफर लाखों-करोड़ों लोगों से जुड़ा है। यही वजह है कि भारतीय रेलवे अपने यात्रियों की हर छोटी से छोटी परेशानी को ध्यान में रखते हुए एक समाधान पेश करता है।

अब मान लीजिए कभी आपकी ट्रेन छूट जाती है तो ऐसे में क्या आप दूसरी ट्रेन ले सकते हैं या नहीं, यह सवाल जेहन में आ सकता है। ट्रेन छूट जाने पर टिकट के साथ दूसरी ट्रेन ली तो जा सकती है, लेकिन इसे लेकर भी भारतीय रेलवे की ओर से कुछ नियम तय किए गए हैं।

जनरल टिकट के साथ ले सकते हैं दूसरी ट्रेन

भारतीय रेलवे के नियमों (Indian Railway Rules) के मुताबिक, अगर यात्री के पास जनरल टिकट है तो वह दूसरी ट्रेन से सफर (Without Train Ticket Travel) कर सकता है। लेकिन, इसके लिए ट्रेन की कैटेगरी भी मायने रखेगी।

वहीं, अगर यात्री के पास रिजर्व वाला टिकट है तो यह नियम बदल जाता है। रिजर्व टिकट के साथ ट्रेन छूट जाने पर दूसरी ट्रेन से सफर नहीं किया जा सकता है। अगर ऐसा किया जाता है तो पकड़े जाने पर आपसे जुर्माना वसूला जाएगा।

ट्रेन छूट जाए तो क्या करें

दरअसल, कई बार कुछ गंभीर स्थितियों की वजह से ट्रेन छूट जाती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए भारतीय रेलवे टिकट का पैसा वापस देने की भी सुविधा पेश करती है।

ट्रेन छूट जाए तो टिकट रिफंड के लिए क्लेम करना होता है। हालांकि, इसके लिए भी भारतीय रेलवे की शर्तों का ध्यान रखा जाता है। जैसे कि एक बार चार्ट तैयार हो जाए और इसके बाद टिकट कैंसिल करते हैं तो आपका पैसा रिफंड नहीं होगा।

सोने-चांदी को सस्ते दामों में खरीदने का मौका, दोनों की कीमत में आई इतनी मंदी

आज सोने की कीमत 72150 रुपये प्रति 10 ग्राम रही। वहीं बुधवार को गोल्ड 72200 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। चांदी भी 550 रुपये गिरकर 90950 रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गई। पिछले सत्र में यह 91500 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुई थी। वैश्विक बाजारों के अंदर कॉमेक्स में हाजिर सोना 2313 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा था।

नई दिल्ली। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के अनुसार, वैश्विक स्तर पर कमजोर रुख के अनुरूप गुरुवार को स्थानीय बाजार में सोने की कीमत 50 रुपये गिरकर 72,150 रुपये प्रति 10 ग्राम रह गई। वहीं, चांदी भी 550 रुपये गिरकर 90,950 रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गई।

Gold-Silver के ताजे दाम

आज सोने की कीमत 72,150 रुपये प्रति 10 ग्राम रही। वहीं, बुधवार को गोल्ड 72,200 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। चांदी भी 550 रुपये गिरकर 90,950 रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गई। पिछले सत्र में यह 91,500 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुई थी।

एचडीएफसी सिक्योरिटीज में कमोडिटीज के वरिष्ठ विश्लेषक सौमिल गांधी ने कहा-

दिल्ली के बाजारों में, हाजिर सोने (24 कैरेट) की कीमतें 72,150 रुपये प्रति 10 ग्राम पर कारोबार कर रही हैं, जो पिछले बंद से 50 रुपये कम है।

ग्लोबल मार्केट की स्थिति

वैश्विक बाजारों में, कॉमेक्स में हाजिर सोना 2,313 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा था, जो पिछले बंद से 2 डॉलर कम है। पीली धातु ने अपना लाभ खो दिया और अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा यह कहने के बाद गिरावट में कारोबार कर रहा है कि हाल के महीनों में मुद्रास्फीति अपने लक्ष्य स्तर की ओर और गिर गई है।

अमेरिकी मुद्रास्फीति के आंकड़ों के बाद सोने और चांदी की कीमतों में तेजी आई, लेकिन बुधवार को फेड मीटिंग में फेड चेयर जेरोम पॉवेल की तीखी टिप्पणियों के बाद वे ऊपर नहीं टिक पाए।

गांधी ने कहा कि अमेरिकी फेड अधिकारियों ने इस साल सिर्फ एक बार ब्याज दर में कटौती का संकेत दिया है। पिछले सत्र में चांदी 29.35 डॉलर प्रति औंस के मुकाबले मामूली गिरावट के साथ 29.30 डॉलर प्रति औंस पर आ गई।

सरकार के पास गेहूं का पर्याप्त स्टॉक, आयात शुल्क में बदलाव की योजना नहीं

परिवहन विशेष न्यूज

सरकार की ओर से आश्वस्त किया गया है कि घरेलू जरूरतों को पूरा करने एवं कीमतों को स्थिर रखने के लिए गेहूं समेत अन्य अनाजों का पर्याप्त भंडार है। जरूरत पड़ी तो बाजार में हस्तक्षेप के लिए भी सरकार तैयार है। सरकार ने यह भी स्पष्ट किया है कि अभी उसका गेहूं के आयात शुल्क में बदलाव करने का इरादा नहीं है।

नई दिल्ली। खाद्यान्न की बढ़ती कीमतों और महंगाई पर नियंत्रण के लिए केंद्र सरकार पैनी नजर रख रही है। सरकार की ओर से आश्वस्त किया गया है कि घरेलू जरूरतों को पूरा करने एवं कीमतों को स्थिर रखने के लिए गेहूं समेत अन्य अनाजों का पर्याप्त भंडार है। जरूरत पड़ी तो बाजार में हस्तक्षेप के लिए भी सरकार तैयार है।

आयात शुल्क में बदलाव की गुंजाइश नहीं

सरकार ने यह भी स्पष्ट किया है कि अभी उसका गेहूं के आयात शुल्क में बदलाव करने का इरादा नहीं है। उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने गुरुवार को बयान जारी कर कहा है कि गेहूं के बाजार मूल्य पर बारीकी से नजर रखी जा रही है।

सुनिश्चित किया जा रहा है कि जमाखोरी न हो और कीमतें स्थिर रहे। रबी विपणन सत्र वर्ष 2024 के दौरान 11.2 करोड़ टन गेहूं का उत्पादन हुआ है। साथ ही भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) ने 11 जून तक लगभग 2.66 करोड़ टन अनाज खरीदा है।

1.84 टन करोड़ टन की जरूर

केंद्र की सार्वजनिक वितरण प्रणाली एवं अन्य कल्याणकारी योजनाओं के लिए लगभग 1.84 करोड़ टन की आवश्यकता है। इसे पूरा करने के बाद भी बफर स्टॉक में अधिशेष अनाज रहेगा। जरूरत पड़ी तो बिक्री के लिए बाजार में उतारा जा सकता है।

केंद्र सरकार ने स्पष्ट किया है कि गेहूं का स्टाक कभी भी मानदंडों से नीचे नहीं गया है। बफर स्टॉक को देखते हुए गेहूं के आयात पर शुल्क संरचना को बदलने का फिलहाल कोई प्रस्ताव नहीं है।

वर्ष 2034 तक नौ ट्रिलियन डॉलर की होगी भारतीय इकोनॉमी, सेंसेक्स भी छुएगा नई बुलंदियां : मॉर्गन स्टेनले

मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल में भारतीय अर्थव्यवस्था के और भी तेजी से आगे बढ़ने की उम्मीद है। तमाम रेटिंग एजेंसियां पहले ही भारतीय इकोनॉमी को लेकर पॉजिटिव भविष्यवाणी कर चुकी हैं। भारत पहले ही दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थवयवस्था बन चुका है और साल 2027 तक उसके चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने की पूरी उम्मीद है। अब मोर्गन स्टेनली ने भी इसे लेकर बड़ी बात कही है।

नई दिल्ली। यह दशक भारत का होगा। भारत तेज विकास दर हासिल करने की राह पर अग्रसर है। स्थिति यह है कि वैश्विक इकोनॉमी में अगले एक दशक में जो इजाफा होगा उसमें 20 फीसदी हिस्सा अकेले भारत का होगा। वर्ष 2034 तक भारत की इकोनॉमी का आकार नौ ट्रिलियन डॉलर (नौ हजार अरब डॉलर, अभी है 3.7 ट्रिलियन डॉलर) का हो जाएगा। यह बात प्रसिद्ध वैश्विक आर्थिक सलाहकार एजेंसी मोर्गन स्टेनले ने अपनी एक नई रिपोर्ट में कही है।

ढांचागत क्षेत्र पर बना रहेगा फोकस

रिपोर्ट आम चुनाव में एनडीए को मिली जीत के बाद जारी की गई है। रिपोर्ट बताती है कि पिछले एक दशक के दौरान सरकार व आरबीआई के स्तर पर आपूर्ति पक्ष सुधारने, इकोनॉमी को व्यवस्थित करने, सामाजिक सुधार, कारपोरेट टैक्स घटाने, जीएसटी लागू करने जैसे फैसलों से संभव हुआ है। रिपोर्ट यह भी कहती है कि ढांचागत क्षेत्र पर फोकस बना रहेगा और कृषि क्षेत्र में सुधार की कोशिश भी सरकार करेगी।

भारतीयों की प्रति व्यक्ति आय भी होगी दोगुनी

रिपोर्ट में कहा गया है कि आने वाले दशकों में भारत में कई तरह के बदलाव देखने को मिलने वाले हैं। समाज के निम्न और उच्च आय वर्गों की मांग में काफी बदलाव देखने को मिलेगा। लंबे समय तक ब्याज दरों के कम होने से बैंकिंग कर्ज की रफ्तार भी तेजी से बढ़ेगी। अगले चार-पांच वर्षों के दौरान सामान्य तौर पर आय में 20 फीसद सालाना बढ़ोतरी की उम्मीद की जा सकती है। देश की जीडीपी में लगातार 6.5 फीसद की सालाना की वृद्धि होने की वजह से खपत का ट्रेंड भी काफी बदलेगा। वर्ष 2034 तक भारतीय इकोनॉमी का आकार नौ ट्रिलियन डॉलर यानी नौ लाख करोड़ डॉलर का हो जाएगा। इस दौरान भारतीयों की प्रति व्यक्ति आय मौजूदा 2498 डॉलर सालाना से बढ़ कर 5,793 डॉलर हो जाएगी।

सेंसेक स भी बनाएगा नए रिकॉर्ड

मोर्गन स्टेनले का अनुमान है कि तब तक 35 हजार डॉलर आय वाले भारतीय परिवारों की संख्या भी पांच गुणा बढ़ कर 2.5 करोड़ हो जाएगी। सेंसेक्स में अगले पांच वर्षों तक 12-15 फीसदी की वृद्धि की संभावना भी जताई गई है। ऊर्जा खपत का ट्रेंड भी काफी बदल जाएगा। शेयर बाजार में बड़ी संख्या में नये निवेशक प्रवेश करेंगे।

400 दिन में अमीर बनने का फॉर्मूला, SBI की इस स्पेशल FD स्कीम का आप भी उठा सकते हैं फायदा

एसबीआई अपने ग्राहकों के लिए स्पेशल एफडी की सुविधा पेश करता है।दरअसल हम यहां एसबीआई की अमृत कलश एफडी स्कीम की बात कर रहे हैं। इस स्कीम के साथ एसबीआई के ग्राहक 400 दिन में अमीर बन सकते हैं। बैंक ने अमृत कलश डिपॉजिट स्कीम की वैधता को बढ़ा दिया है।

नई दिल्ली। देश का सबसे बड़ा पब्लिक सेक्टर बैंक एसबीआई (State Bank Of India) अपने ग्राहकों के लिए स्पेशल एफडी की सुविधा पेश करता है। दरअसल, हम यहां एसबीआई की अमृत कलश एफडी स्कीम (SBI Amrit Kalash FD Scheme) की बात कर रहे हैं।

कितने दिन के लिए कर सकते हैं निवेश

इस स्कीम के साथ एसबीआई के ग्राहक 400 दिन में अमीर बन सकते हैं। बैंक ने अमृत कलश डिपॉजिट स्कीम की वैधता को बढ़ा दिया है।

जहां पहले यह स्कीम 15 फरवरी 2023 से 31 मार्च 2023 के लिए लाई गई थी। इसके बाद इस स्कीम की वैधता को सितंबर, दिसंबर और अब 30 सितंबर 2024 तक बढ़ा दिया गया है।

इस स्कीम के साथ बैंक नॉर्मल एफडी से ज्यादा ब्याज ऑफर करता है। इस स्कीम के साथ बैंक अपने सीनियर सिटिजन को ज्यादा ब्याज ऑफर कर रहा है।

कितनी है ब्याज की दर

एसबीआई (State Bank Of India) की अमृत कलश एफडी स्कीम में 400 दिन की अवधि के साथ ग्राहकों को 7.10% की दर से ब्याज ऑफर किया जाता है।

वहीं, सीनियर सिटिजन के लिए ब्याज की दर कुछ ज्यादा होती है। अमृत कलश एफडी स्कीम में सीनियर सिटिजन ग्राहकों को 7.60% की दर से ब्याज ऑफर किया जाता है।

कौन-से ग्राहक कर सकते हैं निवेश

एसबीआई की अमृत कलश एफडी स्कीम डॉमेस्टिक और एनआरआई ग्राहकों के लिए लाई गई है।

कितना कर सकते हैं निवेश

एसबीआई (State Bank Of India) की अमृत कलश एफडी स्कीम में 2 करोड़ रुपये से कम राशि निवेश की जा सकती है। वहीं, 2 करोड़ रुपये से कम निवेश करने पर 7.10% की दर से ब्याज ऑफर किया जाता है। इस स्कीम के तहत 2 करोड़ रुपये या इससे ज्यादा निवेश करते हैं तो 7.10% दर से ब्याज मिलेगा।

एनएसए के पद पर बने रहेंगे अजित डोभाल, मोदी सरकार ने एक और अफसर का बढ़ाया कार्यकाल

परिवहन विशेष न्यूज

केंद्र सरकार ने अजीत डोभाल को फिर से राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार नियुक्त किया है। वहीं कैबिनेट की नियुक्ति समिति ने डॉ पी के मिश्रा को प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव के रूप में नियुक्त किया है। पी के मिश्रा की नियुक्ति प्रधानमंत्री के कार्यकाल के साथ या अगले आदेश तक रहेगी। समाचार एजेंसी के मुताबिक उनको वरीयता तालिका में कैबिनेट मंत्री का दर्जा दिया जाएगा।

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने पूर्व आईपीएस अधिकारी अजीत डोभाल को फिर से राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार नियुक्त किया है। एक आधिकारिक आदेश के मुताबिक, उनकी नियुक्ति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल के साथ या अगले आदेश तक रहेगी।

पीके मिश्रा बने रहेंगे प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव

वहीं, कैबिनेट की नियुक्ति समिति ने डॉ पी के मिश्रा को प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव के रूप में नियुक्त किया है। पी के मिश्रा की नियुक्ति प्रधानमंत्री के कार्यकाल के साथ या अगले आदेश तक रहेगी। समाचार एजेंसी के मुताबिक, उनको वरीयता तालिका में कैबिनेट मंत्री का दर्जा दिया जाएगा।

तीसरी बार NSA बनें डोभाल

मालूम हो कि डॉ. पीके मिश्रा प्रधानमंत्री कार्यालय में प्रशासनिक मामलों को संभालेंगे, जबकि डोभाल राष्ट्रीय सुरक्षा, सैन्य मामलों और खुफिया मामलों का देखरेख करेंगे। 1968 बैच के आईपीएस अधिकारी डोभाल को लगातार तीसरी बार देश का राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार नियुक्त किया गया। उनको आतंकवाद विरोधी मामलों के जाने-माने विशेषज्ञ और परमाणु मुद्दों पर उनकी विशेषज्ञता के लिए जाना जाता है।

पिछले एक दशक से प्रधानमंत्री के साथ हैं पीके मिश्रा

वहीं, पीके मिश्रा 1972 बैच के सेवानिवृत्त अधिकारी हैं। वह पिछले एक दशक से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ हैं। दोनों अधिकारी प्रधानमंत्री मोदी के सबसे करीबी और भरोसेमंद माने जाते हैं।

ग्रेस अंक वाले 1563 कैंडिडेट्स की 23 को परीक्षा 30 जून तक परिणाम पर रीनीट नो एग्जाम- सुप्रीम कोर्ट

परिवहन विशेष न्यूज

एसडी सेठी। केन्द्र की नई नवेली सरकार के शिक्षा मंत्री ने गुरुवार को नीट की -2024 की परीक्षा में कथित धांधली पर गुरूवार को सुप्रीमकोर्ट में सुनवाई हुई। केन्द्र की ओर से शिक्षा मंत्री ने प्रस्ताव रखा गया कि ग्रेस अंक पाने वाले 1563 नीट कंडीडेटस के स्कोरकार्ड निरस्त होगें।इसके बाद बिना ग्रेस मार्क्स के स्कोरकार्ड जारी किए जाएगें।

दरअसल याचिकाकर्ताओं ने नीट परीक्षा में 1563 कैंडिडेट्स को दिए गए ग्रेस मार्क्स पर आपत्ति जताई थी।एनटीए ने खुद ही इस मामले की जांच के लिए एक कमेटी बनाई थी।इस कमेटी ने,11,12 जून को बैठक की। कमेटी ने सुझाव दिया है कि ग्रेस मार्क्स पाने वाले 1563 कैंडिडेट्स के स्कोरकार्ड निरस्त किए जाने चाहिए। और इसके बाद दोबारा परीक्षा कराई जानी चाहिए। ये स्टूडेंट्स या तो बगैर ग्रेस मार्क्स वाले ओरिजिनल नंबर को माने या दोबारा से परीक्षा दें। ग्रेस पाए 1563 कैंडिडेट्स के रीएग्जाम का नोटिफिकेशन गुरूवार 13 जून को ही जारी कर दिया गया है। इन स्टूडेंट्स की 23 जून को परीक्षा ली जाएगी। और 30 जून से पहले रिजल्ट भी घोषित कर दिए जाएगे। बता दें कि जंतर-मंतर पर नीट से छल खाए सैंकडों स्टूडेंट्स धरने पर बैठे हुए है।उनका कहना है कि एनटीए जो इन सब धांधली बाजी के लिए जिम्मेदार है ,उसी बिल्ली को ही दूध के पहरे पर क्यों बिठाया गया है। इसकी जांच तो किसी बाहरी बॉडी जिसमें सीबीआई, या सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में पूरी धांधली बाजी की जांच होनी चाहिए। इसके साथ ही नए सिरे से नीट की दोबारा परीक्षा ली जानी चाहिए। बहरहाल धरने पर बैठे स्टूडेंट्स की मांग है कि मौजूदा रिजल्ट के बेस पर कांऊसिलिंग को रोका जाए। फिलहाल जुलाई के पहले वीक तक कांऊसिलिंग पर रोक लगा दी है। अब इस मामले में अगली सुनवाई 8 जुलाई को होगी। वहीं शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का कहना है कि पेपर लीक के कोई सबूत नहीं मिले है। राजस्थान के एक सैंटर पर अंग्रेजी का पेपर पहुंचा गया था। लेकिन कोई पेपर लीक नहीं हुआ है।एनटीए पर भ्रष्टाचार के आरोप निराधार है।यह एक बहुत ही विश्वसनीय संस्था है।बहरहाल सुप्रीमकोर्ट इस मामले की सुनवाई कर रहा है और हम उसके निर्णय का पालन करेगे।उन्होने यह भी कहा कि हम सुनिश्चित करेगें कि किसी भी छात्र को नुकसान न हो।

अग्निपथ स्कीम के तहत सेना में शामिल होने के लिए 24 जून से रजिस्ट्रेशन और 25 जुलाई से ऑनलाइन एग्ज़ाम शुरू

परिवहन विशेष न्यूज

अग्निपथ स्कीम के तहत सेना में शामिल होने के लिए 24 जून से रजिस्ट्रेशन और 25 जुलाई से ऑनलाइन एग्ज़ाम शुरू होंगे, जो 10 वी 12वी पास है ज़रूर इस मुहिम का हिस्सा बने, अपने आसपास के बच्चों तक ये जानकारी पहुंचाएं।

ज़रूर से ज़रूर इस जानकारी को अपने दोस्त रिश्तेदारों तक पहुंचाएं।

समझ रहे हों ना ये किस के लिए तैयारी हो रही हैं इसलिए वक्त रहते हुवे हमें भी भर्ती होने के लिए तैयारी स्टार्ट कर देनी चाहिए। यही योजना भारत की रक्षा करेगी,

पहला साल: 21,000×12= 2,52,000

दूसरा साल: 23,100×12= 2,77,200

तीसरा साल: 25,580×12= 3,06,960

चौथा साल: 28,000×12= 3,36,000

कुल मिला कर 11 लाख 72 हज़ार 160 रुपए, चार सालों में मिलेंगे उसके बाद, रिटायरमेंट पर 11 लाख 71 हज़ार।

बच्चो, जॉब आर्मी की है, रहना खाना, इलाज वगैरह सब फ़्री है, मतलब जो उम्र नुक्कड़ों पर चाय सिगरेट में निकल जाती है, उन 4 सालों में 23 लाख 43 हज़ार 160 रुपये कमाने का सुनहरा अवसर है।

ध्यान रहे सेना को जितने जवानों की जरूरत होती है उसे चार गुना ज्यादा भर्ती ली जाती है 4 साल बाद आप में से जो टॉप करेंगे वह नियमित सेवा में चले जाएंगे और तीन गुना वापस अपने घर जाकर कारोबार कर सकते हैं

आप 17 से 23 साल की उम्र के लड़के अग्निपथ योजना के तहत भारतीय सेना को जॉइन ज़रूर कीजिए। समझिए सरकारी पैसों से 4 साल आपको आर्मी की ट्रेनिंग देंगे, साथ मे इतने सारे पैसे भी, जॉब वैसे भी नहीं है, बारहवीं या गरेड्यूशन करने के बाद सीधे अग्निपथ के रास्ते पर चले जाइए, यही आपका भविष्य है और हमारा भी।

उसके बाद 24-25 की उम्र में रिटायरमेंट के बाद, इन पैसों से कोई बिजनेस शुरू कर लीजिएगा, या नहीं तो इंडियन आर्मी की ट्रेनिंग के साथ ही, आर्मी का अनुशासन आपके बहुत काम आएगा। लाइफ जैसी अभी चल रही है, उससे बेहतर तय है। तो आप अग्निपथ योजना के विरोध का हिस्सा हरगीज ना बने, बल्कि उसे गहराई तक जाकर समझने का प्रयास करे, आप के लिए बल्क में, आर्मी तक नहीं पहुँचने का जो आरक्षण था अब वो ख़त्म हो चुका है।

और सोचिए 24 के उम्र में 0 से आर्मी ट्रेनिंग के साथ कुल मिला कर 11 लाख रूपये सैलरी के रूप में मिलने वाला पूरा पैसा अगर आप ख़त्म भी कर देते हैं तो रिटायरमेंट के वक़्त मिलने वाला 11 लाख 71 हज़ार रुपिया कम नहीं है।

वायु सेना में अग्निपथ स्कीम के तहत अग्निवीरवायु भर्ती प्रक्रिया पर विस्तार से दी गई जानकारी

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

शाहपुरा नम्बर 5 ए एस सी वायुसेना जोधपुर से आए अधिकारी विंग कमाण्डर अभिषेक कटोच ने अग्निपथ स्कीम के तहत भर्ती प्रक्रिया की गुरुवार को राजकीय आई टी आई शाहपूरा , राजकीय आई टी आई बनेडा ,राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शाहपूरा, स्वामी विवेकानन्द मॉडल स्कूल शाहपूरा में विद्यार्थियों एवं स्टाफ को विस्तार से जानकारी दी गई। भारतीय वायु सेना के अधिकारी विंग कमाण्डर अभिषेक कटोच कमाण्डिंग ऑफिसर ने बताया कि साढ़े 17 से 21 वर्ष आयु वाले अविवाहित पुरूष एवं महिला उम्मीदवार इस भर्ती के लिए पात्र होंगे। भर्ती प्रक्रिया हेतु उम्मीदवारों को 12वीं कक्षा या इसके समकक्ष परीक्षा विज्ञान संकाय में गणित, भौतिक और अंग्रेजी विषय के साथ एवं कला तथा वाणिज्य संकाय मे किसी भी विषय के साथ 50 फीसदी अंकों के साथ ,अंग्रेजी विषय में 50 फीसदी अंक होना जरूरी है या 03 वर्षीय इंजीनियरिंग डिप्लोमा धारक या 02 वर्षीय वोकेशनल कोर्स पास उम्मीदवार आवेदन के पात्र है।

उन्होंने बताया कि इच्छुक अविवाहित पुरूष एवं महिला उम्मीदवार भर्ती से संबधित विस्तृत जानकारी भारतीय वायुसेना की आधिकारिक वेबसाइट indianairforce.nic.in और careerindianairforce.cdac.in पर भी इस संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। भर्ती के लिए इच्छुक अभ्यर्थी https://agnipathvayu.cdac.in पर लॉग इन कर विस्तृत जानकारी हासिल कर सकते हैं। कार्यक्रम में वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी बी एल मीणा, सार्जेंट अभिषेक जेसवाल, सार्जेंट वी डी शर्मा सहीत सम्बन्धित आई टी आई एवं विद्यालय के अधिकारी/कर्मचारी मौजूद रहे।

पूरे देश में आक्रोश है क्योंकि... संसद में गूंजेगा NEET रिजल्ट में गड़बड़ी का मामला; बीजेपी को घेरने की तैयारी में कांग्रेस

NEET UG Exam Issue
मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी में पेपर लीक के मामले को लेकर कांग्रेस ने सरकार की तीखी आलोचना की है। पार्टी ने कहा कि इस मामले को लेकर देश में जो गुस्सा है उसकी गूंज संसद में भी सुनाई देगी। साथ ही कांग्रेस ने नीट परीक्षा मुद्दे की सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में जांच की अपनी मांग दोहराई।

नई दिल्ली। मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी में पेपर लीक के मामले को लेकर कांग्रेस ने सरकार की तीखी आलोचना की है। पार्टी ने कहा कि इस मामले को लेकर देश में जो गुस्सा है उसकी गूंज संसद में भी सुनाई देगी। साथ ही कांग्रेस ने नीट परीक्षा मुद्दे की सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में जांच की अपनी मांग दोहराई। कांग्रेस ने राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (NTA) के महानिदेशक को हटाने की भी मांग की है। पार्टी ने दावा किया है कि नीट परीक्षा की जांच के लिए चल रही मांग के प्रति भाजपा सरकार का रवैया गैरजिम्मेदाराना और असंवेदनशील है।

सरकार ने करोड़ों युवाओं का भविष्य बर्बाद किया

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने गुरुवार को कहा कि पिछले दस सालों में मोदी सरकार ने पेपर लीक और धांधली के जरिए करोड़ों युवाओं का भविष्य बर्बाद कर दिया है।

पैसे दो, पेपर पाओ का खेल चल रहा है- खरगे

कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, ₹नीट परीक्षा में ग्रेस मार्क्स ही एकमात्र समस्या नहीं थी। इसमें धांधली हुई है, पेपर लीक हुए हैं, भ्रष्टाचार हुआ है। मोदी सरकार के कामों की वजह से नीट परीक्षा में शामिल होने वाले 24 लाख छात्रों का भविष्य दांव पर है।₹ उन्होंने बड़ा आरोप लगाते हुए कहा कि परीक्षा केंद्र और कोचिंग सेंटर का गठजोड़ बन गया है, जहां ₹पैसे दो, पेपर पाओ₹ का खेल चल रहा है।

मोदी सरकार अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकती

कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, ₹मोदी सरकार अपने कामों की जिम्मेदारी एनटीए के कंधों पर डालकर अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकती। पूरे नीट घोटाले में कांग्रेस पार्टी सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में एक निष्पक्ष जांच की मांग करती है।

जांच के बाद दोषियों को कड़ी-से कड़ी सजा दी जाए

उन्होंने कहा, ₹जांच के बाद दोषियों को कड़ी-से कड़ी सजा दी जाए और लाखों छात्र-छात्राओं को मुआवजा देकर उनका साल बर्बाद होने से बचाया जाए। पिछले दल सालों में मोदी सरकार ने पेपर लीक और धांधली से करोड़ों युवाओं का भविष्य बर्बाद किया है।

सुप्रीम कोर्ट ने फिल्म 'हमारे बारह' की रिलीज पर लगाई रोक, कहा- ट्रेलर में है आपत्तिजनक डायलॉग्स

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को अन्नू कपूर की फिल्म हमारे बारह की 14 जून को रिलीज पर रोक लगा दी। पीठ ने फिल्म की रिलीज पर रोक लगाते हुए कहा कि हमने सुबह फिल्म का ट्रेलर देखा है और सभी आपत्तिजनक संवाद ट्रेलर में बरकरार हैं। शीर्ष अदालत ने बांबे हाई कोर्ट में याचिका का निपटारा होने तक फिल्म की स्क्रीनिंग पर रोक लगा दी।

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को अन्नू कपूर की फिल्म 'हमारे बारह' की 14 जून को रिलीज पर रोक लगा दी। शीर्ष अदालत ने उन आरोपों पर संज्ञान लिया कि फिल्म इस्लामी आस्था और विवाहित मुस्लिम महिलाओं के लिए अपमानजनक है। जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की पीठ ने याचिकाकर्ता अजहर बाशा तंबोली की ओर से पेश अधिवक्ता फौजिया शकील की दलीलों पर संज्ञान लिया और बांबे हाई कोर्ट से याचिका पर जल्द से जल्द फैसला करने को कहा।

फिल्म की स्क्रीनिंग पर भी तब तक रहेगी रोक : पीठ ने फिल्म की रिलीज पर रोक लगाते हुए कहा कि हमने सुबह फिल्म का ट्रेलर देखा है और सभी आपत्तिजनक संवाद ट्रेलर में बरकरार हैं। शीर्ष अदालत ने बांबे हाई कोर्ट में याचिका का निपटारा होने तक फिल्म की स्क्रीनिंग पर रोक लगा दी। शकील ने कहा कि हाई कोर्ट ने अनुचित आदेश के जरिये फिल्म पर लगी रोक हटा दी।

कर्नाटक में लगा है प्रतिबंध : उन्होंने कहा कि हाई कोर्ट केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड को समिति गठित करने का निर्देश नहीं दे सकता था क्योंकि बोर्ड भी मुकदमे में एक पक्ष था। शीर्ष अदालत ने कहा कि पक्षकारों को अपनी सभी आपत्तियां हाई कोर्ट के समक्ष उठाने की छूट है। उल्लेखनीय है कि इस फिल्म को कर्नाटक में पहले ही प्रतिबंधित किया जा चुका है।

महिला हिंसा की रोकथाम एवं जागरूकता हेतु "पुलिस चौपाल" कार्यक्रम के अंतर्गत राहुल नगर मल्टी में बालिका/महिलाओं से किया संवाद

भोपाल। नगरीय पुलिस भोपाल द्वारा महिला अपराधों की रोकथाम एवं जागरूकता हेतु विगत वर्षो से शहर की गरीब एवं झुग्गी बस्तियों में निरंतर जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में "पुलिस चौपाल" कार्यक्रम के अंतर्गत राहुल नगर मल्टी में महिलाओ/बालिकाओं से सुरक्षा संवाद किया गया, जिसमें लगभग 200 बालिकाएं/महिलाएं मौजूद रही। उक्त कार्यक्रम में एसीपी श्रीमती निधि सक्सेना थाना प्रभारी कमला नगर निरूपा पांडे उपनिरीक्षक कविता उइके सहायक उप निरीक्षक निधि त्रिपाठी महिला सुरक्षा शाखा नगरीय पुलिस भोपाल एवं ऊर्जा डेक्स सहायिका प्रधान आरक्षक सुनंदा चौधरी थाना कमला नगर उपस्थित थे। उपरोक्त कार्यक्रम में राहुल नगर मल्टी की समस्त महिलाओं से उनकी समस्याएं जानी गई एवं निदान हेतु उपाय बताए गए साथ ही पुलिस द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में अवगत कराया गया एवं पुलिस हेल्पलाइन नंबरों की जानकारियां दी गई साथी बालिकाओं को भविष्य को उज्जवल बनाने हेतु जानकारियां दी गई गुड टच बेड टच बताए गए साथी वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या साइबर फ्रॉड के बारे में समझाइए दी गई तथा उनके द्वारा पूछे गए सवालों का संतोषप्रद उत्तर दिया गया।

बुजुर्ग नहीं, भाग्यशाली लोग

वे भाग्यशाली लोग हैं जो 60 पार कर गये। कैनेडा में, भारतीय मूल के डॉ दिनेश छुरा 60 साल से अधिक उम्र के लोगों को, 'बुजुर्ग' कहने के बजाय, 'भाग्यशाली लोग' कहने की वकालत करते हैं।

अपनी उम्र बताने/जोड़ने का तरीकाः
यदि आपकी उम्र 60 वर्ष है तो..
उम्र 16 + 44 अनुभव = 60 वर्ष
डॉ. छुरा ने 60 साल के लोगों के
₹भाग्यशाली व्यक्तिर₹
बनने के रहस्य को
₹37 वाक्योंर₹ में
इस प्रकार समझाया :-

1. चलते रहो, बिना किसी वजह के भी पैदल चलो। लिफ्ट का उपयोग कम से कम करें लेकिन इन सब में आपके जूते अत्यधिक कंफर्टेबल होने चाहिए।

2. जब आप चिड़चिड़ा महसूस करें तो गहरी सांस लें।

3.व्यायाम करें, तांकि शरीर में अकड़न महसूस न हो।

4.गर्मियों में, एयर- कंडीशनर चालू होने पर, अधिक पानी पिएं। और हो सके तो एयर कंडीशन में ना बैठें।

5.आप जितना चबाएंगे, आपका शरीर और मस्तिष्क उतना ही ऊर्जावान होगा।

6.याददाश्त उम्र के कारण नहीं, बल्कि लंबे समय तक मस्तिष्क का उपयोग न करने के कारण कम होती है।

7.ज्यादा दवाइयां लेने की जरूरत नहीं है। जरूरत होने पर आपकी रसोई के मसाले व अन्य सामान आप दवाई की जगह प्रयोग में ला सकते हैं। फिर भी ज्यादा जरूरी हो तो आयुर्वेद या होम्योपैथी का सहारा लें।

8.रक्तचाप और रक्त शर्करा के स्तर को जानबूझ कर कम करने की आवश्यकता नहीं है।

9.केवल वही काम करें, जिससे आप प्यार करते हैं। व आपको उस से खुशी मिलती हो।

10.चाहे कुछ भी हो जाए, हर समय घर में नहीं रहना चाहिए। रोजाना घर से बाहर जरूर निकलें, और टहलें भी।

11.जो चाहो खाओ, पर नियन्त्रित मात्रा में।

12.हर काम सावधानी से करें। जल्दबाजी आपको महंगी पड़ सकती है।

13.उन लोगों से भी बुरा व्यवहार न करें, जिन्हें आप नापसंद करते हैं।

14.अपनों व अपने जीवनसाथी का ख्याल रखें।

15.बीमारी से, अंत तक लड़ने के बजाय इसके साथ जीना सीखना बेहतर है।

16.मुश्किल समय में, ईश्वर जी की मदद से आगे बढ़ने की कृपा मिलती है।

17.हर बार, खाना खाने के बाद, थोड़ा सा गुनगुना पानी, अवश्य पियें। यां खाना खाने के कम से कम 1 घंटे बाद पानी पिएं। खाना खाने के तुरंत बाद बैठकर पेशाब करने से आपके गुर्दे ठीक रहते हैं।

18.रात में, जब भी उठें, पानी कम मात्रा में अवश्य पियें।

19.जब नींद नहीं आये, तो जबरदस्ती न करें। राम नाम की माला लगातार शुरू कर दें। आपको आराम से नींद आ जाएगी।

20.खुशमिजाज चीजें करना, दिमाग को तेज करने वाली सबसे अच्छी गतिविधि है।

21.अपने लोगों से बातचीत करते रहें। आपके पास कम लोग हैं या आप अकेले रहते हैं तो फोन का इस्तेमाल करें।

22.एक ₹पारिवारिक चिकित्सकर₹ को, अपने आसपास जल्दी खोज लें। तांकि जरूरत पड़ने पर उससे संपर्क साधा जा सके।

23.धैर्य रखें, लेकिन अत्यधिक नहीं, या हर समय अपने आप को अच्छा बनने के लिए मजबूर न करें।

24.नया सीखते रहें, वर्ना बूढ़े कहलाएंगे।

25.लालची मत बनो, अब जो कुछ भी तुम्हारे पास है, वही अच्छा व काफी है। अपने और अपनों के ऊपर खर्च करें। अंत में बाकी सब छोड़ कर जाना यही सत्य है।

27.जब कभी बिस्तर से उठना हो, तो तुरंत खड़े न हों, 2-3 मिनट रुककर, उठें।

28.जितनी अधिक परेशानी वाली चीजें हैं, उतनी ही दिलचस्प हैं , चिंता ना करें।

29.स्नान करने के बाद कपड़े पहनते वक्त दीवार आदि का सहारा लें।

30.वही करें, जो अपने और दूसरों के लिए हितकारी हो।

31.अपने आज को, इत्मिनान से जिएं।

32.इच्छा, दीर्घायु का स्रोत है !

33.एक आशावादी के रूप में जियें।

प्रसन्नचित्त व्यक्ति, लोकप्रिय भी होते हैं और दूसरों को भी प्रसन्नचित रखते हैं।

34. रोजाना मंदिर अवश्य जाएं। दिल खोलकर दान करें। गौ माता जी की व अन्य जीव जंतुओं, कीड़ों मकोड़ों आदि की सेवा करें।

35.जीवन और जीवन के नियम आपके अपने हाथों में हैं।

36.इस उम्र में सब कुछ शांति से स्वीकार करे !

37. मित्र सबसे ज्यादा इसी उम्र में जरूरी हैं अपनी एक मित्र मंडली बनायें। सुबह शाम उनसे साथ हंसी-ठिठौली करना आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद होगा। आप किसी पार्क आदि में बैठ सकते हैं या व्हाट्सएप ग्रुप बनाएं व अपने मित्रों के साथ खूब हंसी-ठिठोली करें।

बाकी का जीवन बोनस है इसे बोनस समझ कर जिएं आनंद ले आनंद दें।

सभी 60 पार कर चुके व करने वाले मित्रों को समर्पित

हँसते रहिये हंसाते रहिये, तंदरुस्त रहिए

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023